एक ही रास्ता

(नाटक)

परिकल्पना एवं शोध – श्री बजरंग मुनि

नाट्य रूपान्तरण – श्री राम प्यारे 'रसिक'

प्रस्तुति मार्गदर्शन – श्री रामसेवक गुप्ता

निर्देशक/प्रस्तुति –श्री आनन्द कुमार गुप्ता

मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान

42, मारूति लाइफ स्टाईल कोटा रोड रायपुर 492001

एक ही रास्ता -2

मार्गदर्शक प्रकाशन

42, मारूति लाइफ स्टाईल कोटा रोड

रायपुर 492001

support@margdarshak.info

मो0– 7869250001

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN: 00000000

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : **संजय गुप्ता**

मुद्रक

.....

सहयोग राशि : **10/**

EK HI RASTA BY RAM PYARE RASIK

पात्र परिचय

भाग 1

(1) संन्यासी (2) घुरउ (3) कतवारू (4) नेता (5) धर्मगुरू (6) गुण्डा (7) व्यापारी सेठ

भाग – 2

(1) संचालक – कवि कोयल (2) अफलातुन (3) कवि चाँच (4) शिकायतकर्ता (5) थानेदार (6) एस0पी0 (7) भक्त–3 (8) बावला साधु

भाग – 3

(1) धर्मगुरू (2) गुण्डा (3) नेता जी (4) व्यापारी (5) पण्डित जी (6) गणेश (7) रमेश

भाग – 4

(1) विरोधी नेता (2) सेठ (3) मजदूर (4) शिक्षक (5) किसान (6) उधोगपति (7) पण्डित जी (8) भक्त जून (10) डाक्टर – आँख (11) डाक्टर – एक्सरे (12) डाक्टर – हड्डी (13) चमचा (14) ठेकेदार (15) डाक्टर – दॉत (16) ठेकेदार (17) धुरउ (18) कतवारू (19) नेता (20) एस0डी०ओ०

भाग – 5

(1) श्रीमति आशा (2) श्रीमतिवर्मा (3) श्रीमति कुसुम (4) नेताजी (5) शबनम (6) पण्डित जी (7) नेतापत्नी (8) महेश (9) रमेश

भाग – 6

(1) बाबला संत (2) चेला (3) नेता (4) बेटा (5) पण्डित जी (6) नौकर (7) नेता (8) ठेकेदार (9) इंजीनीयर (10) हरिजन (11) रमेश (12) महेश

भाग – 7

(1) रमेश (2) महेश (3) पण्डित जी (4) नेता (5) नेता पुत्र (6) आवेशित बेटा (7) धुरउ (8) कतवारू

नाटक

एक ही रास्ता

(पहला दृश्य)

(परदा उठता है। मंच पर गेरूवा कपड़ा पहने हाथ में तंबूरा लिये, गाते हुए एक संन्यासी का प्रवेश। उसके पीछे–पीछे दो, साधारण वेशभूषा में किसान चलते रहते हैं उनमें से एक का नाम घुरउ और दूसरे का नाम कतवारू)

(1)

भोले भोले भोले
महादेव कह गये नंदी से, ऐसा कलयुग आयेगा।
सज्जन सारे मौन रहेंगे झूठा गाल बजाएगा।
कोई नहीं सुरक्षित होगा, ऐसा ही होगा शासन।
मंहगांई का शोर मचाकर बाँटेंगे सस्ता राशन
जन सेवा का बोर्ड टाँगकर, नेता माल उडायेगा।
सज्जन मारा जायेगा।
डीजल बिजली सस्ता होगा, टैक्स लगेगा राशन पर।
छोटी छोटी बात में हम निर्भर होंगे शासन पर।
नेता और भगवान बीच में नेता इज्जत पायेगा ।
सज्जन मारा जायेगा।
मुल्ला पंडित अपनी अपनी, सेकेंगे खुलकर रोटी।
आड़ धर्म की लेकर दोनों, फेकेंगे अपनी गोटी।
गुण्डे मौज करेंगे भाई, सज्जन मारा जायेगा।
सज्जन मारा जायेगा।
नेता तिकड़मबाज रहेगे सब को मूर्ख बनायेंगे।
केवल अपना घर भरने का, मिलकर प्लान रचायेंगे।
नाम रहेगा जनता का पर, नेता राज चलायेगा।
सज्जन मारा जायेगा।

(गीत समाप्त होने पर)

घुरउ – (उँचे स्वर में) महराज की जय हो
महराज! आपका गीत अब कुछ–कुछ मेरी खोपड़ी में भी समा रहा है। अंग्रेज तो चले गये। हमारा देश आजाद हो गया। कुर्सी के ऊपर हमारे नेता चढ़ कर बैठ गये। जो बलिदान दिये, उनको कोई पूछने वाला नहीं है। वे लोग जोगी थे। उनके बाद भोगी चढ़ बैठे। जनसेवा के नाम में जान लेवा काम हो रहा है।

कतवारू– (चहकते हुए) ठीक कहे दादा। हम जिसे अपना नेता चुने हैं वही अपने लोगों का घर भर रहा है। तुम्हारी जन सेवा की बात सुनकर मुझे एक कविता याद आ रहा है सुन ले –

जन सेवा, देशभक्ति जहाँ पर भी लिखा है।
झूठों का ही गिरोह वहाँ बैठा दिखा है।

घरूउ – (हँसते हुए) वाह रे भाई वाह! तुम तो काफी बुद्धिमान हो गये रे कतवारू। ठीक समझ रहा है। देख न गाँव की बात है। झूठा सेठ का बेटा जिस दिन चुनाव लड़ा था उस दिन उसके घर में खाने को दाना भी नहीं रहा। चुनाव जीतते उसके घर रूपिया बरसने लगा। आज उसके घर में दस लाख रूपया का कार चमक रहा है। हमारे पुरखे पसीना गार गार के मर गये। हम भी मेहनत करते हैं, फिर भी जैसा का तैसा। न मरते हैं, न मोटाते हैं।

संन्यासी (शांत स्वर में) – अरे भाई अभी भी समय है– जागो। और समाज द्वारा की गई व्यवस्था पर परिवार चलाओ। ग्राम सभा को सर्वोच्च बनाओ। हमारे संविधान में ऐसी व्यवस्था हो कि जनप्रतिनिधि को चुनने वाले कभी भी उसे हटा सकें.....समझ में आ रहा है ना.....। तभी हमारा लोकतंत्र लोक नियंत्रित होगा अपने ग्राम सभा को ग्राम संसद की तरह सर्वोच्च बनाओ। उसे वह अधिकार हो तो कि वह अपने नियम कानून खुद बना सके तभी

हमारे समाज से भ्रष्टाचार हट सकेगा और अपराध खत्म हो सकेंगे तभी अपराध मुक्त समाज की स्थापना हो सकेगी.....

घुरउ– ठीक कहे महाराज। आपका बात हम सभी को समझायेंगे।

कतवारू – चल तो दादा अब नेता के घर चलें। उसके घर की तरफ़ बड़ा सेठ बामन मुल्ला और दादा लोग जा रहे थे। चल तो झाँक कर देखेंगे कि वो क्या योजना बना रहे हैं।

घुरउ– चल भाई चल।

(परदा गिरता है)

दूसरा दृश्य
(परदा उठता है)

(नेता जी के साथ बड़े–बड़े उद्योगपति, धर्मगुरू और गुंडे योजना बनाने में लगे हैं। घुरउ और कतवारू उनको झांक कर देखते हैं।)

नेता– (गंभीर स्वर में) भाइयों। आजादी के बाद देश का सारा भार हमारे कंधो पर आ टिका है। हम अपने बाप–दादों की तरह देश के लिये अपने परिवार को कष्ट में नहीं डाल सकते। हमें परिवार के लिये भी कुछ जोड़ना है, लेकिन साथ–साथ देश को भी आगे ले जाना है। इसके लिये आप अपना सुझाव दें।

धर्मगुरू– हम अपनी और देश की भलाई तो सोच रहे हैं, किन्तु समाज के विषय में क्या सोचना है?

गुण्डा– आप समाज की चिन्ता क्यों करते हैं? समाज तो सदियों से गुलाम रहा है। उसे गुलाम रखकर ही हम अपनी और देश की तरक्की कर सकते

हैं। पहले लोग ताकत के दम पर गुलाम बनाये जाते थे अब उन्हें भ्रम में डालकर गुलाम बनाकर रखना है।

नेता– इसके लिये हमने एक फार्मूला तैयार किया है।

गुण्डा (चहकते हुये)– कैसा फार्मूला है नेता जी? हम आप की अक्ल को दाद देते हैं। आप पूरे देश को चाट जायेंगे तब भी लोगों को पता ही नहीं चलेगा।

नेता (हंसते हुये)– सब्र कीजिये। सब्र कीजिये।
हमारा फॉर्मूला है कि अगर समाज को गुलाम भी बनाना है और संतुष्ट भी रखना है तो समाज को एकजुट नहीं होने देना चाहिये। समाज को धर्म, जाति, भाषा क्षेत्रीयता, गरीब–अमीर, किसान–मजदूर के 6 आधार पर बॉट कर रखना होगा। हमारी भूमिका उस बन्दर के समान होनी चाहिये जो इस प्रकार की बिल्लियों की रोटी न कभी बराबर होने दे और न कभी संतुष्ट होने दें। हम साथ साथ यह भी प्रयत्न करे कि ऐसे कमजोर वर्गों के बीच हम हमेशा सक्रिय दिखें परन्तु करें कुछ नहीं। हमारे धर्मगुरू यह काम आसानी से कर सकते हैं। उन्हें चाहिये कि वे धार्मिक टकराव को बराबर हवा देते रहें। गरीब अमीर का काम तो हमारे वामपंथी भाई भी कर रहे हैं। अब जातीय टकराव का काम भी शुरू हो चुका है। इस टकराव को हमें हवा देनी है। भारत और क्षेत्रीयता का टकराव तो हम भाषावार प्रान्त बनाकर जिन्दा कर देंगे। किसान–मजदूर टकराव भी शुरू हो जायेगा। एक बार किसान की कमर टूट जाये तो सब सुधर जायेगा।

सेठ– वाह! नेताजी वाह! क्या सुझाव है आपके? सुझाव कितने अमूल्य हैं। अरे! आपके सुझाव के जरिए हम इस देश पर सदियों राज कर सकते हैं .....

नेता जी – (हंसते हुए) अरे भाई! अगर आपके भी कोई सुझाव हो तो बताइए.....

सेठ– आप की सारी योजनाएँ सही है। अगर आप का शासन उद्योगों को सर्वोच्च प्राथमिकता दे तो काम कठिन नहीं है। शासन बिजली, डीजल और पेट्रोल की कीमतें बढ़ने ही न दे तो मजदूर का श्रम मूल्य बढ़ ही नहीं पायेगा और मशीनी उद्योग लगातार देश की तरक्की करते रहेंगे। गरीब जब बेरोजगार और भूखा रहेगा तो उसे चाहे हम या चाहे आप सस्ता राशन, सस्ता कपडा आदि देकर अपना पिछलग्गू बनाकर रख सकेगें।

गुण्डा– (चहकते हुए) आपके सारे प्रस्ताव हमें मंजूर है। लेकिन यह होगा कैसे?

धर्मगुरु– होगा कैसे? हम गांधी के नाम पर गरीबों को कहेंगे कि चर्खा चलाओं, हस्तकरघा लगाओं, लघु उघोग लगाओ दूसरी और गुप्त रूप से उद्योगपतियों को कहेंगे कि बड़े–बड़े कल कारखाने लगाओ। खादी और लघु उद्योगों पर प्रत्यक्ष छूट देंगे और बिजली, डीजल, पेट्रोल पर अप्रत्यक्ष कर लगायेगे। धीरे–धीरे लघु उद्योग मर जायेंगे और बड़े उद्योग सारा काम सम्हाल लेंगे।

नेता– ठीक कहा आपने। (मुस्कुराते हुए) हमारी सारी योजनाओं की सफलता में एक मात्र गांधी ही बाधक थे, अब वे नहीं रहे। अब हम गांधी के नाम पर जो कुछ कहेंगे उसे जनता मान लेगी। हम अपनी सारी व्यवस्था को संविधान की किताब में लिख देंगे, जिसे मानना हमारा धर्म है। हम ऐसी व्यवस्था करेंगे कि जब चाहे हम संविधान में संशोधन कर लेंगे, हम ऐसा लोकतंत्र लायेंगे जो लोक पर तंत्र होगा, लोक का तंत्र नहीं।

नेता, सेठ, गुण्डा– (तीनों जोर से हँसते हुए) अब हमें कॉकटेल पार्टी का मजा लेना चाहिए (तीनों उठते है)

परदा गिरता है।

दृश्य तीन
(परदा उठता है)

(तीनों काकटेल पार्टी और नृत्य का आनन्द लेते है। नेता, गुण्डा, धर्मगुरू, उद्योगपति बैठे हैं।)

धर्मगुरू – नेताजी! आपने यह क्या कर दिया। आपके लोग खुले आम मुसलमानों के पक्ष में बोलते हैं और हमें गाली देते हैं। वे हमें साम्प्रदायिक कहते हैं। यहाँ तक कि आप भी उन्हीं की हां में हां मिलाते हैं। आपने मुसलमानों और इसाइयों के पक्ष में कानून भी बना दिये हैं। क्या यह हमारे साथ धोखा नहीं है।

व्यापारी– बिल्कुल ठीक कहते हैं पण्डित जी। नेताजी ने तो मजदूरों को इतना सर पर चढ़ा रखा है कि ये बात बात में हम पर केस करने की धमकी देते हैं। आप मजदूरों को सस्ता राशन, सस्ता कपड़ा इस तरह बांट रहे हैं कि वे काम करना ही नहीं चाहते। हमारा उत्पादन प्रभावित हो रहा है जो देश का भी नुकसान है और हमारा भी।

गुण्डा– अरे भाई सेठ जी। नेताजी ने सिर्फ आपके साथ ही धोखा नहीं किया है। उन्होंने तो हमारे साथ भी धोखा किया है। थोड़ी थोड़ी बात में दारोगा बन्द करने की धमकी देता है और कभी कभी तो पीटता भी है।

व्यापारी– हां, ठीक कहते हो, मामूली–सा इंस्पेक्टर हमारे कारखाने में आता है और हमें ही धमकी देता है। अरे! हमारे जैसे संपन्न आदमी उसके आगे गिड़गिड़ाते हैं, उसे पैसे भी देते हैं। इसकी शिकायत करें भी तो कहां करें। ऊपर से नीचे तक हर जगह हिस्सा बँटा हुआ है...

गुण्डा – आपके साथ तो फिर भी अच्छा व्यवहार करता है, जो पैसा लेकर छोड़ देता है। हमारे साथ तो और भी अन्याय होता है। पैसा भी लेता है और

कोर्ट में भी दौड़ाता है। पूछने पर कहता है कि तुम्हें पीटा नहीं, वही क्या कम है।

धर्मगुरू– जिस तरह नेता जी ने हमारे साथ धोखा किया है उसे अब या तो नेता जी साफ करें या हम सब मिलकर कोई और मार्ग खोजें।

नेता– मैने किसी के साथ धोखा नहीं किया है, जब समाज को बांट कर रखना है, यह उसी दिन तय हुआ था तो बताइये कि दो गुटों में बांटकर यदि हम लोग अपने–अपने गुट का पक्ष न ले तो दो गुट बनेंगे कैसे? हमारी मजबूरी है कि हम कमजोर तबके को हमेशा ही कमजोर बना रहने दें और उन्हें जबानी इस तरह प्रोत्साहित करें कि वे सभी मजबूत लोगों को अपना दुश्मन समझने लगें।

व्यापारी– किन्तु यह बताइये कि आपने आदिवासियों को इतना सिर पर क्यों चढ़ा रखा है कि वे धीरे–धीरे आग मूतने लगे हैं।

नेता– तुम नहीं समझते सेठ। धन कमा लेने से ही तो सारी अकल नहीं आ जाती। बताओ कि कौन आदिवासी उद्योगपति बन पाया। उसकी जमीन बेचने पर हमने रोक लगा दी। अब कोई किसान अपनी जमीन पर न घर बना सकेगा न उद्योग लगा सकेगा। कृषि उपज का दाम हम बढ़ने ही नहीं देंगे। वह जीवन भर हल जोतता रहेगा या पेड़ लगाता रहेगा और तुम ठाठ से हवाई जहाज की सैर करते रहना।

धर्मगुरू– बात तो नेताजी की ठीक है भाई। इनकी भी तो मजबूरी है। इन्हें भी तो चुनाव लड़ना है (नेताजी की ओर मुड़कर) यह बताइये नेताजी कि आगे की आपकी क्या योजना है?

नेताजी– अभी तो बहुत काम बाकी है भाई। अब पुरुष महिला के बीच दीवार खड़ी करनी है। फिर गांव और शहर को गुटों में बांटना है। तुम लोग यदि साथ जुड़े रहे तो हम तो ऐसा काम कर देंगे कि हर घर परिवार गुटों में बँट जायेगा और सब हम पर निर्भर हो जायेंगे।

गुण्डा– अच्छा! अब और आगे मत बताइये। हम समझ गये कि आप जो भी कर रहे हैं, यह सोचकर ही कर रहे हैं।

(2)

संन्यासी का प्रवेश

आज खड़ा सम्पूर्ण देश के आगे यहाँ सवाल हैं,
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर निकला आज मशाल है।।

राजनीति में जहर घुला है, टूट रही है दीवारें।
मन्दिर उगल रहे हैं शोले, खंजर गढ़ती मीनारें।
कब्बे मोती के अधिकारी चुगता रेत मराल है।
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर.....

खतरे में है आज शराफत, नेता दंगे करवाते।
मुल्ला ? पण्डित के झगड़े में लोगों के घर जल जाते।
षडयंत्रों से आज हिल रही. संसद की दीवार हैं।
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर.....

शोषक भ्रष्टाचारी ही इस युग में नाम कमाता है।
जो अबला की शील लूटता, वही राम बन जाता है।
तोड़ रहा है जन–जीवन को, चंदा और हड़ताल है।
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर.....

गुण्डे हैं हर ओर सुरक्षित, सज्जन आँसू पीते हैं।
आज वोट की राजनीति में, मर–मर कर हम जीते हैं।
धूर्त, दगाबाजों का फैला, यहां बजरंग जाल है।
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर.....

ज्ञानयज्ञ, अपराध मुक्त जीवन का सुन्दर सपना है,
जो मानवता को जीवन दे, राज धर्म वह अपना है।
ज्ञानयज्ञ इस अन्धकार में अव्यवस्था का काल है।
ज्ञानयज्ञ ऐसे में लेकर.....

(परदा गिरता है)

नाटक भाग – 2

दृश्य–1

(परदा उठता है)

मंच पर चार कवि बैठे हैं। सभी शायराना अंदाज में बैठे हैं। माइक सामने है।

(मंच संचालक)

कवि ''कोयल''– आदरणीय श्रोताओं को कवि कोयल का प्रणाम। (बनावटी आंसू पोंछते हुए) दर असल पहले हमारा नाम काक मोहलवी था। कवि कोयल बनने के पीछे एक राज है। दरअसल हमने एक कोयल पाली थी जो काजल की तरह काली थी। उसकी आवाज चुनाव में खड़े नेता की तरह प्यारी थी। हम उसके और वह हमारी थी। उसने न भागने का आश्वासन दिया था। मगर उसने एक नेता की तरह हमारा दिल तोड़ दिया। किसी यार के चक्कर में हमारा घर ही छोड़ दिया। उसकी याद में उसके जाने के बाद हमने अपना ही नाम कोयल रख लिया है। खैर कहानी लम्बी हो जायेगी। इसलिये मैं अपनी कहानी छोड़कर शायरे–शहर जनाब अफलातून झकमारी साहब से गुजारिश करता हूँ कि वे अपना कलाम पेश करें।

शायर अफलातून– (नजाकत के अंदाज में)

जनाब पेश तो पिता जी करते थे।
हम तो कलाम पढ़ते हैं।
हक की बात छोड़कर–
हर बात पर लड़ते हैं
हम नेता की तरह–
चीखते हैं– चिल्लाते हैं–
पर देश को खोखला करने का राज––
किसी को नहीं बताते हैं।

कवि कोयल– (गंभीर मुद्रा में) हुजुर! कोई गजल पढ़िये और आगे बढ़िये।

श्रोता सुबह से भाषण
पी रहे हैं–
वो तो सेहत अच्छी है–
इसलिये जी रहे हैं–

अफलातुन –(नजाकत के साथ)– बेशक....। रास्ता बताने के लिये शुक्रिया। लीजिये गजल सुनिये–

उल्लूओं का बाग में, हर ओर है पहरा यहाँ।
बुलबुलों का इसलिये मायूस है चेहरा यहाँ।
कोई भी सुनता नहीं है, वक्त की आवाज को,
हर जुबां खामोश है, हर आदमी बहरा यहाँ,
आज जख्मों की यहाँ, गहराईयाँ मत नापिये,
दर्द सीने में समन्दर से भी है गहरा यहाँ
लोग बैठे हैं अंधेरे को लपेटे देखिये,
क्या पता सूरज अभी तक है ठहरा कहाँ
खिड़कियों को सोच की अब खोलिये अपनी रसिक,
हर तरफ उठता धुआँ है हर तरफ कुहरा यहाँ

(सब को सलाम करके शायर अपनी जगह पर बैठ जाते हैं)

कवि कोयल– अब मैं कवि चोंच साहब से निवेदन करूँगा कि वे अपनी रचना पेश करें।

कवि चोंचो– हाँ, तो जनाब! मैं किसी कहानी में चोंच न मारकर सीधे कुछ गंभीर रचना पेश करता हूँ। अगर आप ताली नहीं बजायेंगे तो मैं समझ लूँगा कि आप समझदार है–

(1) इस देश का चरित्र हमने ऐसा गढ़ा है,
रावण का कद देखिए हर साल बढ़ा है।।
जिस पर भी नजर डालिए लगता वही रसिक है,
बस राम के लिवास में रावण ही खड़ा है।।

(3) दिखता है नजारा यही यहाँ पे रोज है।
इस दौरे– सियासत में उल्लूओं की मौज है।

हर रोज बुलबुलों की मौत हो रही रसिक
कौवों की हिफाजत में लगी पूरी फौज है।

(कवि चोंच बैठ जाते हैं)

कवि कोयल– अब मैं कवि शायर कभी शबनम कभी फायर जनाब कातिल साहब को अपना कलाम पेश करने की दावत देता हूँ।

कातिल – जनाब मैं चन्द शेर पेश करने जा रहा हूँ।

पहले नौजवान आशिकों की खिदमत में–

शेर– आशिक है वो बेकार जो जाना नहीं गया।
जिसने न खाई मार औ थाना नहीं गया।

एक शेर शादी–शुदा लोगों के नाम–

शेर– सिंदूर जब से हमने भरी उनकी मांग में।
तब से खड़े हैं आज तलक एक टांग पे।

शेर– शादी के पहले खोये जो रहते थे याद में।
पागल दिखाई देते हैं शादी के बाद में।

आज के जनसेवकों के नाम एक शेर–

जो हँस मरे देश की किस्मत संवार कर।
दावत उड़ाते कौवे है उनकी मजार पर ।

शेर – फैली है सियासत की रसिक ऐसी गोटियां
सस्ता है खून मुल्क में महँगी हैं रोटियां।

मैं यहीं अपने कलाम को लगाम देता हूँ और गुजारिश करता हूँ कि जनाब कोयल बोहलवी साहब अपनी रचना पेश करे–

कवि कोयल– मैं सीधे अपनी रचना पर आता हूँ–

शेर– शराफत सड़क पर पड़ी रो रही है।
शराफत की अम्मा कहां सो रही है।।
कर रहा जो अपहरण सीता का इस दौर में,
मंच पे बैठे वही चेहरा बदल कर राम है।

गीत

आज खतरे में अमन है, देश है, आवाम है,
अब शराफत को बचाना आप सबका काम है।। आज खतरे .....आवाम है।
लुट रही है आबरू, इज्जत सरे बाजार में,
न्याय कैदी है यहां, कानून अपना काम हैं।। आज खतरे .....काम है।
चोर गुण्डों की सियासत, का जहर फैला यहां,
ज्ञानदीपक जो जलाये, आज वो बदनाम है।। आज खतरे .....काम है।
कर रहा जो अपहरण, सीता का है इस दौर में,
मंच पर बैठा वही चेहरा बदल कर राम है।। आज खतरे .....काम है।
ज्ञान मण्डल ज्ञान का दीपक जलायें कह रहा,
हर तरफ छाया अन्धेरा रोशनी का काम है।। आज खतरे .....काम है।
तोड़ना होगा हमें मिलकर अंधेरे का किला,
हैं चुनौती यह बजरंग वक्त का पैगाम है।। आज खतरे .....काम है।

(परदा गिरता है)

दृश्य–2
(परदा उठता है)

(दृश्य थाने का है। थानेदार बैठा है। उसके सामने कुछ लोग बैठे हैं, एक व्यक्ति घबराये हुए प्रवेश करता है)

शिकायतकर्ता– सलाम हुजूर । मेरे यहाँ डकैती हो गई। डकैत करीब एक लाख का गहना और नगद लेकर भाग रहे हैं। मेरी रिपोर्ट लिखिये और फौरन उन्हें पकड़ने के लिये सिपाही भेजिये तो जल्दी ही पकड़ में आ जायेंगे।

थानेदार– (रोबदार आवाज में) यहाँ हर आदमी फौरन काम करने को कहता है लेकिन हमारी परेशानी कोई नहीं समझता।

शिकायतकर्ता– आपकी क्या परेशानी है हुजूर आप को तो सरकार ने पूरे अधिकार के साथ सिपाहियों की फौज दी है।

थानेदार – (हताश स्वर में) यही तो मुसीबत है। थाने में 22 स्टाफ की जरूरत है। 16 पोस्ट है। इन सोलह में भी चार खाली है, बाकी बचे बारह, जिसमें दो छुट्टी पर है और 6 मंत्री जी के साथ है, तीन जुआ पकड़ने गये हैं–एक थाने के पहरे पर है। मैं खुद प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि कोई आये तो मैं लाला जी के साथ जाकर उनके मकान का झगड़ा निपटाऊँ। उसके बाद आप की डकैती भी पकड़नी है।

शिकायतकर्ता– हुजूर मेरे घर डकैती हुई है। अगर आप देर करेंगे तो डकैत फरार हो जायेंगे। मेरा काम पहले करिये।

थानेदार– भाई मैं लाचार हूँ। लाला जी का काम तो दो घंटे का है। फिर लाला जी आने–जाने की व्यवस्था दे रहे हैं। आपका काम लम्बा है।

(बीच में फोन की घंटी बजती है)

थानेदार– हैलो–में थानेदार बोल रहा हूँ। बताइये क्या बात है। अच्छा एक आदमी ने चार विवंटल राशन का चावल ब्लैक में बेच दिया है, उसे पकड़ता जरूरी है।

(थानेदार के शाँत होते ही फिर घंटी बजती है)

हाँ–हाँ मैं थानेदार ही बोल रहा है। क्या? कोई आदमी गॉजा लेकर जा रहा है। उसे पकड़ना सब से ज्यादा जरूरी है। हाँ, मैं पहुँच रहा हूँ। (थानेदार चल देता है।)

शिकायतकर्ता– (निराश होकर बड़बडाता है–) मुझे इसकी शिकायत एस0पी. से करनी चाहिए।

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य
(परदा उठता है)

(कुर्सी पर एस0पी0 बैठे हैं। उनका बाडी गार्ड खड़ा है। शिकायत कर्ता का प्रवेश)

शिकायतकर्ता– हुजूर! मेरे घर डकैती हुई है। मैंने इसकी रिपोर्ट थानेदार साहब से की तो स्टाफ की कमी बताकर टाल गये। अब आप ही कुछ कीजिये।

एस.पी. (रोबदार आवाज में)– हम क्या कर सकते हैं। हमारे विभाग में स्टाफ की कमी है, इसलिए हम अपराध नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं। हम जानते हैं कि गाँव–गाँव में शराब बन रही है, फिर भी उसे रोक नहीं पा रहे हैं। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि स्टॉफ की कमी है। कितने ही दहेज प्रकरणों को जांच रूकी हुई है। ऐसे में आप चाहते हैं कि डकैती के मामले पर जांच हो, यह कैसे मुमकिन है?

शिकायतकर्ता– मगर हुजूर, डकैती तो संगीन अपराध है, इसकी जाँच तो आपको फौरन करनी चाहिए।

एस०पी० (गुस्से में)– हमें क्या करना चाहिये और क्या नहीं इसे आप सिखायेंगे। सरकारी हुक्म है कि गांजा, महिला–उत्पीड़न और दहेज जैसे अपराध पर पहले कार्यवाही करो। फिर हमारा स्टाफ भी ऐसे मामलों में दिलचस्पी लेता है। मैंने ही उसे गांजा पकड़ने का हुक्म फोन पर दिया था। आपकी रिपोर्ट पर जरूर कार्यवाही होगी।

शिकायतकर्ता– हुजुर! हमारी हिफाजत की जिम्मेदारी आप पर है और आप हमारी हिफाजत करने में असफल हैं।

एस०पी०(गुस्से में)– बस–बस–जनाब! बस कीजिये। सरकार तो आप को अपनी सुरक्षा के लिये बन्दूक और पिस्तौल का लाइसेंस दे रही है ताकि सरकार का बोझ कम हो। आप अपनी हिफाजत खुद करें, यही बेहतर होगा। सरकार के पास सिर्फ एक काम तो है नहीं ... ... आप जाइये ... ... कल थानेदार आपको खुद बुला लेगा– **(परदा गिरता है)**

दृश्य–4
(परदा उठता है)

(मंच पर बावला साधु का प्रवेश उसके पीछे–पीछे भक्तगण हैं। वे मंच पर बैठ जाते हैं)

घुरउ– गुरुदेव! यह कैसी आजादी है? कैसा लोकतंत्र है जिसमें तंत्र के हाथ में सत्ता है और लोक निहत्था है। कोई फरियाद सुनने वाला नहीं .....

साधु– (शांत स्वर में) क्या बात है बेटा जरा समझाकर बताओ।

कतवारू– गुरू देव! दो दिन पहले एक आदमी के घर डकैती हुई। इसकी शिकायत उसने थानेदार से की। थानेदार ने कहा– हमारे विभाग में स्टाफ की कमी है। हम डकैटी से ज्यादा जरूरी गांजा और राशन चोरी को पकड़ना समझते हैं। जनता को अपनी सुरक्षा खुद करनी चाहिये। हर बात के लिये सरकार जिम्मेदार नहीं है।

साधु– फिर क्या हुआ बेटा। प्रभावित व्यक्ति ने फिर क्या किया।

घुरउ– (चहकते हुए) मैं बता रहा हूँ। गुरू जी। प्रभावित व्यक्ति ने अपने शहर के प्रमुख लोगों की सभा बुलाकर उन्हें अपनी सारी समस्या बताई। उसकी समस्या पर सबने सहानुभूति दिखाई।

साधु– सूखी सहानूभूति? समस्या का कोई हल नहीं?

कतवारू– हाँ गुरू जी। (लोग कुछ कहते तभी एक हरिजन ने थानेदार की तरफदारी करते हुए कहा भाइयो! थानेदार अच्छा आदमी है। जब मुझे मेरी जाति का नाम लेकर एक पंडित ने गाली दी थी. तब थानेदार आया था। जिनके घर में डकैती हुई, उसके घर में ज्यादा सम्पति थी, ज्यादे को डकैत ले गये। हम कमजोर वर्ग के लोग है। सरकार को हमें प्राथमिकता देनी चाहिये।

साधु– बेटा! यहाँ तो समस्याओं का अंबार है। लेकिन हमें उन अपराधों को पहले रोकना चाहिए, जिनका प्रभाव पूरे समाज पर पडता है।

भक्त जून– (उछलकर) कैसे गुरुजी? किन अपराधो को पहले रोकना चाहिए?

साधु– सुनो बेटा–सुनो। धार्मिक भेदभाव, महिला अत्याचार, जातीय अत्याचार, गरीबों को कम मजदूरी देना वगैरह ऐसे काम है जो समाज पर सामूहिक प्रमाव डालते हैं इसलिये उनको रोकना जरूरी है। यही कारण है कि मिलावट, जमाखोरी आदि छोटे अपराधों पर पुलिस ध्यान नहीं दे पाती है।

भक्त जून– थाने में स्टाफ कम क्यों है गुरूजी?

साधु– बेटा! नेता कहते हैं कि सभी शिक्षित हो जाएँ, शराब छोड़ दें, सबका चरित्र सुधर जाएं तो बड़े अपराध खुद ही बन्द हो जायेंगे। यही कारण है कि सरकार पुलिस और न्यायालय पर कम खर्च करके शिक्षा और स्वास्थ्य पर ज्यादा खर्च कर रही है।

आओं भजन सुनो और घर जावो–

भजन

भक्तों सुनो खोलकर कान, भक्तों सुनो खोलकर कान।
सोती है सरकार यहाँ पर चादर लम्बी तान। भक्तों ... ...
पड़े डकैती पुलिस ना पकड़े ऐसा जुग है भाई।
गांजा, राशन पहले पकड़े, जिसमें मिले मलाई ।
यही व्यवस्था है चाहे हो, दिल्ली राजस्थान। भक्तों ... ...
आजादी के बाद बढ़े है केवल भ्रष्टाचारी।
कोटा–परमिट औ राशन से बढ़े रोज व्यापारी।
गुण्डे राज चलाते देखो, संकट में है प्राण। भक्तों ... ...
नेता अपनी बात बताते सब को बढ़ा–चढ़ाकर।
राज चाहते हैं ये करना, सब को आज लड़ाकर।
नेता सब महलों में बैठे, मरते आज किसान। भक्तों ... ...
रोटी महंगी आज यहाँ पर और फोन है सस्ता।
समय पर करता सबसे नया बनाओ रास्ता।
लेकिन अब तो तुम्हें चाहिए एक नया हनुमान। भक्तों ... ...

भक्त– गुरूजी सरकार क्या चाहती वह तो हमें भी मालूम है? मुझे आप थोडा खोलकर बताइये न कि हम क्या करे। यह नया हनुमान आकर भी क्या करेगा।

साधु–

हम लेकर संकल्प चले हैं घर–घर अलख जगायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे।
एक बराबर संविधान में होगे सब नर–नारी।
जाति–धर्म का भेद न होगा चाहत यही हमारी।
नेता अगर गलत होगा तो फौरन उसे हटायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे।
लोकतंत्र पर रहे नियंत्रण, ऐसा नियम बनायें।
हम समाज में सामाजिक बन कर परिवार चलायें।
श्रम की मांग बढ़ेगी भाई ऐसा राज बनायेंगे।।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे ।।
करे मिलावट यहाँ न कोई सच्चे हो व्यापारी।
हो अपराधमुक्त यह भारत भागें भ्रष्टाचारी।
राम राज के हर सपने को हम साकार बनायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी हम कानून बनायेंगे।

इसके साथ ही में आज की सभा समाप्त करने की घोषणा करता हूँ–

(गीत समाप्त होता है)

(परदा गिरता है)

भाग 3

दृश्य एक

(परदा उठता है)

(नेताजी, व्यापारी, गुण्डा, धर्म–गुरु, खान–साहब बैठे हैं.)

धर्मगुरू– नेताजी कल के नाटक में तो कुछ लोग आपकी बहुत बदनामी कर रहे थे। वह भी आपके सामने ही। वह दढ़ियल तो ऐसी बातें बोल रहा था कि मेरा मन करता था कि उसकी दाढ़ी ही नोच लूँ।

गुण्डा– मन तो मेरा भी ऐसा ही कर रहा था गुरूजी। यदि में उठकर एक झापड़ भी मार देता तो उसके प्राण ही निकल जाते।

खान जी– आप सबको उस दढ़ियल पर ही गुस्सा क्यों आया? जहर तो दूसरे सब के गीतो में मी कम नहीं था। आप सब उस अकेले को इसलिये कोस रहे है, क्योंकि वह मुसलमान था।

धर्मगुरु– आपको बुरा क्यों लगा खान साहब। हम आपको तो कुछ नहीं कह रहे। उसने नेता जी के विषय में ऐसी–ऐसी बातें कही, जो नहीं कहनी चाहिये थी, इसलिये हमने नेताजी का ध्यान दिलाया। यदि आप को बुरा लगे तो हम उसकी प्रशंसा भी करने को तैयार हैं।

गुण्डा– प्रशंसा की बात करो तुम। मैं तो टिट फोर टैट वाला हूँ। मैं उस दढ़ियल से भी निपट सकता हूँ और अन्य बाकी कवियों से भी। और यदि जरूरत पड़े तो इस खान की औलाद से भी निपट सकता हूँ।

नेता– शान्त रहो भाई। आप लोग क्यों लड़ते हो। कल जो कविताएँ सुना रहे थे ये मेरे खिलाफ कुछ नहीं बोल रहे थे। उन्हें तो हम सम्मानित भी करते हैं और इनाम भी देते हैं। उनकी यह आलोचना ही तो हमारी जान है।

धर्मगुरू– यह कैसे नेता जी?

नेताजी– हमें जो बात समाज को कहनी होती है वह इन्हीं के माध्यम से तो कहनी पड़ती है। हम सीधे तो कह नहीं सकते। गरीब–अमीर, हिन्दू–मुसलमान, महिला–पुरूष, किसान–मजदूर में समाज को बांटना है तो कौन बांटेंगे। वह काम यही लोग करेंगे। ये लोग गांव–गांव धूम–घूम कर महिला शोषित, गरीब, भूखा, आदिवासी, पिछड़ा जैसी भावनाएँ भरते है तब समाज में वर्ग–विद्वेष पैदा होता है और वही प्रचार हमारी पूंजी बनता है। जिसके बदले में हम उन्हें पुरस्कृत करते हैं।

गुण्डा– तो इसके लिये आपको गाली देने की जरूरत क्यों है? वह काम तो बिना गाली दिये भी कर सकते है।

नेताजी– क्या बिगड़ गया हमारा उनकी कविता से उनकी आलोचना से समाज में यह संदेश जाता है कि हमारी उनकी कोई साठ–गांठ नहीं। हम तो रोज ही ऐसी आलोचनाएं सुनते रहते हैं। आप ही लोग कई बार मेरी आलोचना करने लगते हैं, तो बताइये कि क्या मैं कभी बुरा मानता हूँ?

सेठजी– भाई नेताजी, आपकी माया आप ही जानें। हमें तो आपकी अकल पर विश्वास है। इसके आगे हम कुछ नहीं जानते।

(परदा गिरता है)

दृश्य दो
(परदा उठता है)

धर्मगुरू– कल की बात मेरी समझ में नहीं आई नेता जी।

नेता– सब बात आप ही समझ लेगें गुरूजी तो हम लोग यहाँ काहे को बैठे है? (सब लोग हंस पड़ते है। धर्म गुरू झेंप कर)

धर्मगुरू– मजाक मत करो भाई। मुझे समझने दो कि नेताजी सबको मनमाना धन बांटते रहते हैं। कवि, पत्रकार सब इनके आगे–पीछे घूमते रहते हैं। जरा सोचो कि अभी कॉमन बेल्थ खेल में एक गायक को एक गीत गाने के लिए नेता जी ने पांच करोड़ रूपया दे दिया।

सेठ– (आश्चर्य से) पांच करोड़ क्या, यह सच है नेता जी।

नेता जी– अरे भाई! तुम क्यों इतने दुखी होते हो? मैं तो तुम्हें दस करोड़ दिलवा दूँ पर तुम में लेने की कला हो तब न। तुम तो सिर्फ खाना और पचाना जानते हो।

धर्मगुरू– मैं फिर कहता हूँ कि आप लोग मजाक मत करिये। मुझे बताइये कि यह करोड़ो करोड का धन आता कहाँ से है?

नेता जी– यह राज की बात है गुरूजी। हम यह बात किसी को नहीं बताते।

धर्म गुरूजी– मुझे तो आप जरूर बताइये।

नेता जी– गुरूजी हम आज सबके खाने–पीने से लेकर मरने तक की हर वस्तु पर टैक्स लगाते हैं। उस टैक्स का आप सबको पता ही नहीं चल पाता। यदि कुछ कम पड़ा तो कभी कोई चीज विदेश भेज दी और कुछ माह के बाद वही चीज फिर वापस मंगा ली। अच्छा हो कि ज्यादा मत पूछिये।

गुण्डा– ठीक तो कह रहे हैं नेता जी। हम इन सब मामलों में इतना क्यों समझें।

धर्मगुरू– रूक रे। थोड़ा सा तो जानने दे। नेता जी तानाशाह तो हैं नहीं। जब ये ऐसा करते हैं तो हल्ला क्यों नहीं होता।

नेता– हल्ला करने वाला कौन है गुरूजी। न्यायपालिका कभी टैक्स वृद्धि के खिलाफ नहीं बोलती। उसे भी तो मनमाना अपना वेतन बढ़ाना है। सरकारी कर्मचारी को बोलना ही नहीं। मीडिया कर्मी और सामाजिक संस्थाएँ बोल सकते थे तो उनका मुँह हम हमेशा बन्द रखते है। आप नहीं जानते गुरू जी कि अखबारों को हम सरकारी खजाने से कितना पैसा देते हैं।

धर्मगुरू– कितना देते हैं?

नेता जी– बताना बेकार है। हम उतना देते हैं जितना आप कभी सोच भी नहीं सकते।

गुण्डा– मैं तो कब से कह रहा हूँ कि हम नेताजी पर विश्वास करें, बहस न करें। ये गुरूजी बेकार पूछते रहते हैं।

नेता जी– कोई बात नहीं, चर्चा करने में कोई हर्ज नहीं।

(परदा गिरता है)

दृश्य तीन
(परदा उठता है)
(नेता, व्यापारी धर्मगुरू, गुण्डा बैठे हैं)

धर्मगुरू– नेताजी इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी आप पुरी तरह मनमानी कर लेते हैं आखिर इसका राज क्या है। और जनता आखिर आपको रोक क्यों नहीं पाती।

नेता जी– रोकेंगे कैसे गुरूजी। अगर आपने एक बार वोट दे दिया तो बस 5 साल तक आराम कीजिये। आपको चुनाव में वोट देने के अलावा किसी भी अन्य मामले में अधिकार ही क्या है?

व्यापारी– अधिकार क्यों नहीं? ये जो हमारे पास कई तरह के अधिकार हैं, वे क्या हैं?

नेता जी– तुम बहुत भोले हो सेठ। तुम्हारे पास सिर्फ वही अधिकार है जो हमने दिये हैं या छोड़ रखे हैं इसके अलावा तुम्हारे पास एक भी अधिकार नहीं है। जो भी तुम देख रहे हो वे अधिकार भी, हम कभी भी जनहित में वापस ले सकते है।

गुण्डा– आप जनहित में ही तो वापस ले सकते हैं। बिना जनहित के तो आप वापस नहीं ले सकते।

नेता जी– और जनहित की व्याख्या कौन करेगा? हम। हम जिसे जनहित कह दें, वही जनहित है। चाहे वह वास्तव में जनहित हो या नही।

गुण्डा– तो क्या संविधान आपको ऐसी मनमानी से नहीं रोक सकता।

नेता जी– संविधान कुछ नहीं कर सकता। यदि संविधान कहीं रोकेगा तो हम संविधान में संशोधन करके उस रुकावट को दूर कर लेंगे।

धर्मगुरू– ऐसा कैसे संभव है नेताजी कि आप संविधान में मनमाने संशोधन भी कर लें और जनता आपको रोक ही न सके।

नेता जी– यही तो है भारत का लोकतंत्र। यहां लोक को नाबालिग और तंत्र को संरक्षक माना गया है, मैनेजर नहीं।

धर्मगुरू– ऐसा संविधान बनाते समय किसी ने आपको रोका क्यों नहीं।

नेता– रोकता कौन? बूढ़ा गांधी मारा जा चुका था, अन्य सबको रोजी–रोटी की चिन्ता थी। हमने मनमाना संविधान लिख लिया

धर्मगुरू– हम कब बालिग होंगे नेता जी।

नेता– फिर कोई गाँधी पैदा होगा और क्रान्ति करेगा उस दिन की प्रतीक्षा करो। तब तक जितना लूट सको हम लोगों के साथ मिलकर लूटो। तुम्हारे लूट में तो संविधान आड़े नही आ रहा। ध्यान रखना कि लूट का माल बंटना चाहिये अन्यथा पेट फट गया तो मैं दोषी नहीं।

(परदा गिरता है)

दृश्य चार
(परदा उठता है)
(पण्डित जी कुछ लोगों के साथ बैठे हैं)

गणेश– पंडित जी कल नेता जो संविधान की बात कर रहे थे। जब नेता लोगों ने मनमाना संविधान बना लिया है और इसकी आड़ में मनमानी कर रहें है तो हम सभ मिलकर नया संविधान बना ले।

पण्डित जी– रामानुजगंज में कन्हर किनारे देश भर के जाने–माने विद्वानों ने आकर सालों तक विचार मंथन कर लोक स्वराज के आदर्शों के अनुरूप एक आदर्श संविधान की रूपरेखा तैयार किया है। अब इसके पक्ष में जनमत जागृत हो जाएं तब इसे लागू किया जा सकता है।

रमेश– उस संविधान पर आप एक गीत सुनाते हैं, वही गीत सुनाईये ना!

पण्डित जी– रमेश एक नहीं दो गीत सुन लो

गीत (1) नया विधान बनायेंगे हम नया विधान बनायेंगे।
नेता, कर, कानून बदलकर भ्रष्टाचार मिटायेंगे।।

मूलभूत अधिकारों का पूरा–पूरा हो संरक्षण।
जीने का अभिव्यक्ति और सम्पत्ति का होगा आरक्षण।।

एक देश है एक संहिता सबके लिये बनायेंगे।
नेता, कर, कानून बदल कर भ्रष्टाचार मिटायेंगे।।

श्रम का मूल्य बढ़ेगा इसमें तब भागेगी बेकारी।
काम मिले हर हाथ को अपनी ऐसी होगी तैयारी।।

शोषण भ्रष्टाचार मिटाकर खुशहाली हम लायेंगे।

नेता, कर, कानून बदल कर भ्रष्टाचार मिटायेंगे।।

एक बिन्दु कर का आरोपण करना है इसमें भाई।।
उत्पादन बढ़ने से ही तो घट सकती है महंगाई।।

सत्ता सिमट नहीं पाये यह प्रावधान हम लायेंगे।
नेता, कर, कानून बदल कर भ्रष्टाचार मिटायेंगे।।

जुर्म नियंत्रण की गारंटी देगी अब सरकार यहाँ ।
अमन चैन हो पनप न पाये, कोई भ्रष्टाचार यहां।।

एक देश हम एक यहां पर सबको गले लगायेंगे।
नेता, कर, कानून बदल कर भ्रष्टाचार मिटायेंगे।।
हम नया विधान.....

(2) यह अभिनव भारत संविधान श्रम आधारित जीवन बितान।

परिवार पुंज की नई विभा
सम्यक स्वराज की प्रखर प्रभा
भयमुक्त व्यवस्था प्रावधान। यह अभिनय...

अमूल कान्ति का प्रथम चरण,
अपराध वृत्ति का त्वरित क्षरण,
शाश्वत स्वतंत्रता महागान। यह अभिनव...

यह ज्ञानयज्ञ की नव ज्वाला,
यह ज्ञान तत्व क्षण मतवाला
बजरंगी पोरूष दीप्तिवान। यह अभिनय...

यह दर्पण युग का चिंतन का
प्रेरक समाज परिवर्तन का
जीवन आर्थिकी–प्राणवान । यह अभिनव...
सज्जनता का यह विजय घोष,
वैचारिक मंथन – अमृत कोष.
छल छद्म नीति का तिरोधान । यह अभिनव...

है नव व्यवस्था सम्बन्धों की.
यह नवरचना अनुबन्धों की.
रामानुज नभ का उदित भान। यह अभिनव...

यह अभिनव भारत– संविधान ।

(परदा गिरता है)

दृश्य 1
(परदा उठता है)

(नेता जी को छोड़कर बाकी सब बैठे हैं)

पण्डितजी– आप सब महंगाई से इतना परेशान है तो आप सुझाव दें कि किस चीज को सस्ता कर दिया जाय जिससे महंगाई का प्रभाव न हो।

मजदूर– पण्डित जी, अनाज, दाल, तेल आदि का दाम घट जाय तो बहुत राहत मिले।

किसान भड़ककर– यह कैसे संभव है। किसान तो बेधारा आत्महत्या तक कर रहा है. कर्ज में डूबा जा रहा है तीस चालीस वर्ष पहले एक दिन की मजदूरी दो किलो अनाज थी। अब हम पाच किलो अनाज दें तब भी मजदूर नहीं मिलते। अनाज को सस्ता न करके यदि डीजल पेट्रोल बिजली सस्ती कर दी जाये तो किसान खुश हो जायेगा।

सेठ– बिल्कुल ठीक कहा आपने। ऐसा ही होना चाहिये। एक पंथ दो काज किसान भी खुश और व्यापारी भी खुश।

मजदूर– तब हमारा क्या होगा? आप दोनों सस्ती बिजली सस्ता, डीजल, पेट्रोल पाकर और मशीने बढ़ा लोगे किन्तु हम मजदूर तो बेरोजगार हो जायेंगे। साठ वर्षों में मजदूरी दो किलो अनाज से बढ़कर चार किलो हुई तो क्या हुआ? प्रतिवर्ष देश में पांच से दस प्रतिशत विकास के आधार पर तो हमें अब तक दस किलो अनाज मिलना था।

पण्डित जी– तो बताइये न आप सब मिलकर कि महंगाई कितना प्रतिशत कम की जाय और किन चीजों पर कम की जाय।

किसान– सब चीजों का दाम घटा दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं।

उद्योगपति– बिल्कुल ठीक है। सब चीजें पचास वर्ष पूर्व के भाव पर मिलने लगे तो मजा आ जाय।

मजदूर– बिल्कुल ठीक है

पण्डित– तो बताइये भाई कि यदि पचास रूपये के नोट पर एक रूपया लिख दिया जाये तो क्या दिक्कत होगी।

मजदूर– बहुत अच्छा हो जाएगा 1 रू. में सब मिल जाएगा।

पण्डित जी– और मजदूरी भी तो डेढ़ रूपया ही मिलेगा।

सेठ– बहुत अच्छा होगा। मजदूरी कम होना तो अच्छा होगा।

पण्डित जी– आपका बैंक में जमा पचास लाख रूपया भी तो एक लाख हो जायेगा।

सेठ– तब क्या फायदा होगा?

पण्डित जी– महंगाई एक भ्रम है। नेता और अफसर अपना वेतन बढ़वाने के लिये भ्रम फैलाते है। साठ वर्ष पहले कोदो खाने वाला मजदूर चावल खा रहा है। सेठजी फल और सेव का नास्त पहले भी करते थे क्या? पुराने जमाने में भी तीर्था यात्रा इस तरह होती थी। महंगाई भ्रम है।

किसान– किन्तु यह भ्रम फैलाया क्यों जाता है?

पण्डित जी– किसान, मजदूर व्यापारी कभी ना समझ सकें की उनके अपने उत्पाद और उपभोग की वस्तुओं पर सरकार गुप्त रूप से भारी कर ले लेती है। क्या आप जानते हैं कि सरकार गेहूँ, चावल, दाल, तेल पर भारी टैक्स वसूल लेती है। सरसों तेल पर आठ रुपया लीटर टैक्स वसूलकर महंगाई का रोना रोती है।

मजदूर– लेकिन सरकार छूट भी तो देती है।

पण्डित जी– यही तो तुम्हे पता नहीं भाई। सरकार साइकिल पर तो तीन सौ रूपया टैक्स वसूलती है और रसोई गैस पर दो सौ रूपया छूट दे देती है बताओ तुम्हारे लिए साइकिल ज्यादा उपयोगी है या रसोई गैस।

सेठ– रसोई गैस।

मजदूर– चुप रह रे सेठ। हमें तो पता ही नहीं था कि ऐसा भी होता है। अनाज, दाल, तेल आदि हम जो पैदा करते है उस पर भी भारी कर और कपड़ा लोहा सीमेंट आदि उपयोग करते है उस पर भी टैक्स। यह तो हमें आज ही मालूम हुआ। हम नेता जी से पूछते है।

(सब नेता जी से जाकर पूछते हैं कि क्या हमारे सब प्रकार के ग्रामीण उत्पादन और उपयोग की वस्तुओं पर सरकार भारी टैक्स लेती है।)

नेता– कौन बताया तुमको ये?

किसान– पंडित जी ने बताया और हमें भी लगता है कि यह बात सच है।

(नेता पंडित को मारने को दौड़ता है। पंडित भागता है सब बीच बचाव करते हैं।)

गीत– (1) साजिशों के अड्डे अब मन्दिरों के नाम हो गये।
अर्थतन्त्र में यह सभी, देखिये गुलाम हो गये।।
मौत बिक रही है यहां आदमी जिये कैसे।
खून से भी अब ज्यादा, खंजरों के दाम हो गये।।
आदमी उजाले से अब बचा रहा दामन।
चेहरे अन्धेरे में एक से तमाम हो गये।
अर्थ हीन शब्द हो गये धर्म का किताबो के।
देवता दुकानों में अब सभी नीलाम हो गये।।
नाम पर तरक्की के रास्ते हुए चौडे।
फिर भी बात क्या है. यहां, पांव बढ़ते जाम हो गये।।
बन्दगी के हाथ अब यहां, जिंदगी को लूटने लगे।
जाहिलों के हर तरफ यहां, देखिये मुकाम हो गये।।
कल तलक जो सीता का कर रहे थे अपहरण यहां।
देखता हूँ आज वो, 'रसिक' मंदिरों में राम हो गये।।

(2) कलियाँ सुमन सुगन्धों वाला यह उद्यान स्वदेशी हो।
हर क्यारी हर खेत स्वदेशी हर खलिहान स्वदेशी हो।।
तन मन धन की जन जीवन की प्रिय पहचान स्वदेशी हो,
मान स्वदेशी आन स्वदेशी अपनी शान स्वदेशी हो।

वीर शहीदों के सपनों का हर अभियान स्वदेशी हो.
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।

अभिमन्यु–सा चक्रव्यूह में मेरा भारत देश घिरा,
पथ की मंजिल को रथ रोके, कहाँ क्षितिज का स्वर्ण सिरा,

सजे खड़े हैं द्रोण, कर्ण और दुष्ट दुशासन, दुर्योधन,
कौन दुधिष्टिर, भीम, नकुल, सहदेवों को दे उद्‌बोधन,

जो अर्जुन का मोह मिटा दे यह भगवान स्वदेशी हो।
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो ।।

मन गिरवी है. तन गिरवी है गिरवी है हर स्वांस यहाँ,
बढ़ता जाता कर्ज निरंतर नहीं बची कुछ आस यहाँ,
गांधी तेरी खादी रोती देख दशा इस देश की,
राष्ट्र अस्मिता सिया सरीखी बंदी है लंकेश की।

जो लंका में आग लगा दे, वह हनुमान स्वदेशी हो,
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।।

भारत माता के मंदिर में बहुत प्रदूषण बढ़ा दिया.
लोकतंत्र के शव पर गांधीवाद काट कर चढ़ा दिया,
समझौतों की बात यहां पर होती है हत्यारों से,
गली–गली भारत की गूंजी आतंकी जयकारों से.

बलिदानों की इस धरती का संविधान स्वदेशी हो।
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।।

मानव श्रम बेकार घूमता गलियों के सन्नाटे में,
कृत्रिम उर्जा दौड़ रही है आज यहां फर्राटे से,
मानव श्रम का शोषण होता आज देश में गर्व से
कृत्रिम उर्जा पूजी जाती घर–घर में पर्व से।

जो श्रम को सम्मान दिला दे, वह अभियान स्वदेशी हो।
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।

आधी सदी बितायी हमने, लोकतंत्र के नारों से,
लोकतंत्र की हत्या हो गयी, उसी के पहरेदारों से,
लोकतंत्र का विकल्प हमको अब तत्काल बनाना है.
लोकतंत्र के बदले हम को लोक स्वराज ही लाना है

ऐसे विकल्प आदोलन का हर सोपान स्वदेशी हो।
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।।

(परदा गिरता है)

दृश्य 2
(परदा उठता है)
(मंच पर कुछ लोग तेजी से चल रहे हैं। पंडित जी भी साथ में चल रहे हैं)

एक भक्त– बिना सोचे–समझे भीड़ के पीछे भागना सरासर बेवकूफी हैं।

दूसरा भक्त– लगता है इस शहर में शायद तुम अकेले अक्लमंद हो। अरे इतनी भीड़ भाग रही है तो कोई न कोई कारण जरूर होगा। इतनी भीड़ में सभी बेवकूफ नहीं होंगे। वो देखो– जुम्मन मियां भी अपनी शेरवानी ठीक करते जा रहे हैं। चलो उन्हीं से पूछते हैं। सारे शहर की खबर उनकी जेब में रहती है किसके घर क्या खाना पका है, किसकी बीबी किसके साथ गजल गाती है, शाही महल के चमचे क्या गुल खिलाते हैं ये सारी कीमती खबरें उनके खजाने में हाजिर स्टॉक रहती है।

पंडित– हाँ भाई, ये ठीक कहते हैं। चलो रास्ते में ही उनसे पूरी जानकारी मिल जायेगी। कोई उन्हें आवाज तो दो कही वो भीड़ में गायब न हो जाएँ।

एक भक्त– (ऊँची आवाज में) ओ जुम्मन काका! ओ जुम्मन काका! जरा धीरे चलिये। हम भी आप के साथ आ रहे हैं।

जुम्मन मियाँ– (बूढे हैं–जबान उर्दू है) ठीक है मियां ठीक है। तुम अपनी रफ्तार तेज करो।

भक्तगण– (हांफते हुए) लो चाचा हम पहुँच गए– प्रणाम चाचा ।

जुम्मन– जीते रहो बरखुदार। घर में सलामती तो है।

एक भक्त– सब ठीक है चाचा। यह भीड़ कहॉ भागी जा रही है चाचा, जिसके पीछे आप भी लगे हैं।

जुम्मन मियाँ– (तेज लहजे में) अरे मियां! तुम इसी शहर में रहते हो और शहर की खबरों से बेखबर हो। पंडित के चक्कर में तुम जन्नत की बातों में उलझे

रहते हो और इस दुनियाँ में कहाँ क्या हो रहा है, इसका इल्म नहीं है। हकीकत की दुनिया में रहना सीखों मियां जिन्हें हकीकत में जीने का हुनर आ गया वही पूरी दुनिया पर हुकुमत करते है।

एक भक्त– (गिड़गिड़ाते हुए) नाराज मत हो बाबा! सिर्फ यह बताओ कि यह भीड़ कहां जा रही है? क्यूं जा रही है? क्या कोई हादसा हो गया है?

जुम्मन– (समझाने के लहजे में) देखो भाई–यह दुनियाँ है। यहाँ उसी की कदर होती है जो फितरत में माहिर होते है। आज वही पहली लाइन में बैठे, वही इज्जतदार दौलतमंद और ताकतवर है, जिनके साथ भीड़ है। जिसके पास जनता की जितनी बड़ी भीड़ है, वह उतना ही बड़ा आदमी है।

एक भक्त– भीड़ से क्या मतलब है चाचा?

जुम्मन– सब्र करो मियां–सब्र करो। तुम्हें सब समझाता हूँ। प्रजातंत्र में भीड़ ही किसी आदमी को कुर्सी पर बिठाती है। भीड़ समझती कुछ नही, बस भेड़ों की तरह पीछे–पीछे भागती है। इसी भीड़ ने नेता जी को बगैर राज्य के राजा बना रखा है। उनकी मुस्कुराहट की एक झलक पाने के लिए ही वह भीड़ दौड़ रही है।

पंडित जी– (व्यग्र स्वर में) मियां! पहेलियाँ मत बुझाओ। असल बात क्या है बताओ। अब शाही महल भी करीब आ गया है।

जुम्मन– ठीक है भाई–ठीक है। मैं भूमिका बता देता हूँ– बाकी महल में खुद ही देख लेना।

पंडित जी – ठीक है मियां। सुना है आज बेचारे कल्लन की भी मौत किसी एक्सीडेंट में हो गई। अस्पताल में बेचारे को देखने वाला कोई नही था। सारे डाक्टर महल में चले गये थे। नर्स बैठी स्वेटर बुन रही थी। अस्पताल में बगैर दवा के उस बेचारे की जान चली गई।

जुम्मन मियाँ– ठीक कहते है पंडित जी, आज एक गरीब इंसान की जिंदगी से एक बड़े आदमी का कुत्ता बेहतर है। आज अस्पताल के सारे डाक्टर नेता जी के महल में उनके बिलायती कुत्ते की तीमारदारी में लगे हैं।

एक मक्त– चाचा। कुत्ते का इलाज तो ढोर डाक्टर करता है फिर यहाँ इन्सानों के डाक्टर क्या करेंगे?

जुम्मन– अरे मियां, नेता जी का कुत्ता बिलायती नस्ल का है। उसी के आखिरी दर्शन के लिए यह भीड़ दौड़ रही है। ढोरों का डाक्टर बैलों की नसबंदी करने गया है. इसलिये अस्पताल के सारे इंसानी डाक्टर नेता जी की खुशामद में कुत्ते के इलाज मैं अपनी–अपनी अक्ल आजमा रहे है।

पंडित जी– (आश्चर्य के स्वर में) अरे मियां! अंग्रेजों को गए तो जमाना हो गया। फिर ये कुत्ता कहाँ से आया? क्या देसी कुत्तों की हमारे देश में कमी है।

जुम्मन– अरे पंडित जी! यही बात तो तुम्हारी अक्ल में नहीं आई। अंग्रेज जाते–जाते कुछ ऐसी बातें छोड़ गये हैं जिनसे निजात पाना मुमकिन नहीं है।

एक भक्त– वे क्या बातें हैं चाचा।

जुम्मन– अरे मियां अंग्रेज जाते–जाते हिन्दू और मुसलमानों के बीच नफरत की दीवार खड़ी कर गए जिसका नतीजा हम भुगत रहे हैं। दूसरी बात... अंग्रेज चले गये मगर अंग्रेजी जुबान नहीं गई। हिन्दुस्तानी हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करते हैं। अधनंगे.....

पंडित जी– और कुत्ता मियॉ?

जुम्मन– मैं वहीं आ रहा हूँ– पण्डित सब्र करो। दरअसल राजा साहब अंग्रेजी हुकुमत के बड़े हिमायती थे। अंग्रेजों ने जाते वक्त राजा साहब को बिलायती नस्ल का कुत्ता बतौर तौहफा दिया था जिसे राजा साहब ने किसी काम के बदले नेता जी को भेट कर दिया था। वही कुत्ता आज बीमार है, जिसकी मातमपुर्सी के लिए आज शहर के लोग दौड़ रहे है।

Song- कुकर जी की जय –

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(परदा उठता है)

(कुत्ता कुर्सी पर पड़ा है। चाहें तो खिलौना कुत्ता को कुर्सी पर रख दें, डाक्टरो की भीड़ अपनी–अपनी राय दे रही है)

नेता जी– कहिए डाक्टर साहब, हमारे अजीज कुत्ते की हालत कैसी है?

मेडिसिन का डाक्टर– हुजुर मैने एम0डी0 किया है। कुत्ते की बी0पी0 नार्मल है विटामिन बी की कमी के कारण भी ऐसी हालत हो सकती है।

जुम्मन मियां– (धीरे से) देख रहे हो पण्डित चापलूसी का कमाल। अभी और डाक्टरों का कमाल देखते जाओ।

आँख का डाक्टर– हुजूर! आँखो में इन्फेक्शन होने की बजह से भी कुत्ता बीमार हो सकता है। मेरे पास विदेशी कम्पनी की दवा है, उसे मंगवाता हूँ।

हड्डी विशेषज्ञ– हुजूर! इसकी रीढ़ की हड्डी में डिसलोकेशन मालूम पड़ता है। मैं इसकी मालिश करता हूँ। ठीक हो जाएगा।

मुंह वाला डाक्टर– हुजूर! कुत्ते के माउथ में इन्फेक्शन हो सकता है। कुत्ता रोज गोश्त खाता है इसलिये, आई थिंक, जबड़े में हड्डी गड़ सकती है।

एक्सरे का डाक्टर– हुजूर में एक्सरे एक्सपर्ट हूँ। ज्यादे खोजबीन करने से बेहतर होगा कि एक्स–रे करा लिया जाय। तभी असली मर्ज का पता चलेगा।

नेता जी– सिविल सर्जन साहब की क्या राय है?

सिविल सर्जन– (रोते हुए) हुजूर! कुत्ता तो काफी पहले मर चुका है। इसकी आँखे खुली थी इसलिए डाक्टर समझ नहीं पाये।

(कुत्ते की मौत पर सभी आँसू पोंछते हैं)

एक चमचा– भाईयों। आज अपने प्यारे कुत्ते से बिछड़ने का गहरा दुख है। यह कुत्ता तीन राजाओं के साथ रह चुका है। हमें चाहिये कि हम इस शाही कुत्ते की शानदार कब्र बनवाएँ ताकि आने वाली नस्लें ऐसे कुत्तों से भी मुहब्बत करना सीख सकें। इसके लिए सभी को स्वेच्छा से अनुदान देकर शाही कुत्ते के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए।

एक ठेकेदार– हुजूर! इस पुनीत काम को करने का मुझे अवसर प्रदान किया जाए। मैंने हुजूर की मेहरबानी से सैकड़ों स्कूलों और पुलों का निर्माण किया है। मुझे कब्र बनाने का तजुर्बा है इसलिए अपनी पुण्य की कमाई से इस शाही कुत्ते की कब्र बनवाऊँगा।

भीड़– यह अनुपम त्याग धन्य है। ठेकेदार जिन्दाबाद शाही कुत्ता जिन्दावाद ।

जुम्मन मियां– हमारे देश में हर साल सैकड़ो पुल बन जाते है और टूट जाते है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है यह तो होता ही रहता है, आश्चर्य की बात यह है कि कई बार पुल बिना बने ही टुट जाता है। इस ठेकेदार की बनाई हुई तीन चौथाई इमारते और पुल टुट चुका है। अब यह देखना है कि इनके द्वारा बनाई गई कब्र कब तक रूकती है।

(परदा गिरता है)

दृश्य चार
(परदा उठता है)
घुरउ, कतवारू, नेता, नेताविरोधी, डाक्टर तथा कुछ अन्य अफसर

धुरउ– आज कैसे आप सब महान लोग इस भिखारी के दरवाजे पर खड़े हैं।

नेता– अरे भाई घुरउ! चुनाव भी आने वाले हैं और हम लोगों ने सोचा कि चलकर आप सबसे मिलकर दुख तकलीफ देख लेना चाहिये। आप तो हमारे मालिक है न।

धुरउ– वह तो है ही मैं आपको तो पहचान गया। आपके सामने वाले नेता जी को भी जानता हूँ। ये बाकी लोग कौन है, जिन्हें में नहीं जानता।

विरोधी नेता– ये आपके अस्पताल के डाक्टर साहब हैं, ये एस०सी०ओ० साहब है, ये जज साहब है,. ये प्रिन्सीपल साहब है,. ये बीडीओ साहब है।

धुरउ– ये सब लोग करते क्या है?

विरोधी नेता– यह एस०डी०ओ० साहब ज्यादा समझा देंगे।

एस०डी०ओ०– हम सब लोग सरकार के आदेशानुसार आप सबकी सेवा करते हैं।

धुरउ– यह सरकार कौन है एस०डी०ओ० जी

एस०डी०ओ०– (चुप रहता है।)

नेता– आप सब ही तो सरकार है। ये सब आपके सेवक है तथा वेतन लेते हैं।

धुरउ– आप लोगों को कितना कितना वेतन मिलता है?

एस०डी०ओ०– मुझे तो माह में चालीस हजार रूपया मिलता है। जज साहब को भी करीब साठ हजार रूपया महिना है। बाकी सब सेवक भी पचीस तीस हजार रूपया महिना पा लेते हैं।

धुरउ– तब तो आप लोगों का खर्चा बर्चा आराम से चल जाता होगा।

एस०डी०ओ– कहाँ चल पाता है, धुरउ जी। इस महंगाई के जमाने में कर्ज ही बना रहता है। हमने तो सरकार से कई बार बढ़ाने की मांग की। परन्तु सरकार

हमेशा ही घाटे में रहती है। इसलिये कभी–कभी कुछ बढ़ाकर हमारी आवाज बन्द कर देते हैं।

धुरउ– यह वेतन आपको देता कौन है।

एस०डी०ओ– आप लोग आप ही तो सरकार है। वेतन कम मिलने के कारण ही तो हम आपकी सेवा उतने अच्छे से नहीं कर पाते जितना करना चाहिये।

धुरउ– ठीक कहा आपने जो मालिक अपने नौकर को संतुष्ट नहीं रख पाता वह मालिक हमेशा समस्या ग्रस्त ही रहेगा। मुझे आज महसूस हुआ कि आप लोग परेशान है। हम मालिक है। हमारा कर्तव्य है कि पहले आप संतुष्ट हो जायें।

(घुरत किनारे जाकर कलवारू से सलाह करता है।)

कतवारू– हम लोगों ने सलाह की है साहब कि पहले आपका पेट भर दिया जाय। इसलिये हम अपने पास बची यह लंगोटी भी निकाल कर आपको देते है।

(कहकर दोनों लंगोटी खोलने लगते हैं, तभी परदा गिर जाता है)

पंडित Song (1) राजनीति बन गई तवायफ, नेता हुये दलाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल।।

संसद को एक पलंग समझ कर उस पर शयन किया,
संविधान को मान के चादर खींचा ओढ़ लिया,

आज तिरंगा बना हुआ है राजनीति की ढाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल।।

अनाचार जो आज हो रहा लोकतंत्र के साथ.
सत्ता में हो या विपक्ष में सब का इस में हाथ,

किसी को भारत माता की इज्जत का नहीं खयाल
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।

लोकतंत्र को लूटतंत्र है बना दिया गद्दारों ने,
लोक यहां कैदी बन बैठा संसद की दीवारों में।

लोक फंसा है कानूनों में तंत्र है मालामाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया, इस समाज का हाल ।।

हम ऐसा आहवान कर रहे हैं कनहर के तीर,
नेता कर कानून सुधारों तभी मिटेगी पीर,

करो प्रतीक्षा अब आगे मत कहें मुरारी लाल ।
तब ही तो सुधरेगा भैया इस समाज का हाल ।।

(2) अब स्वराज्य का बिगुल बजा दो जाग उठी तरुणाई है
परिवर्तन के लिये साथियों क्रान्ति द्वार पर आई है।

कौन चलेगा आज देश से भ्रष्टाचार मिटाने को.
राजनीति के पंख सत्ता से टकराने को,

आज देख ले कौन सजाता मौत के संग सगाई है।
परिवर्तन के लिये साथियों क्रान्ति द्वार पर आई है।।

पर्वत की दीवार कभी क्या रोक सकी तूफानों को,
क्या बन्दूकें रोक सकी है, बढ़ते हुये जवानों को

चूर–चूर हो गई शक्ति वह, जो हम से टकराई है।

परिवर्तन के लिये साथियों क्रान्ति द्वार पर आई है ।।

सावधान, पद या पैसे से होना है गुमराह नहीं.
सीने पर गोली खा कर भी निकले मुंह से आह नहीं.

ऐसे वीर जवानों ने ही देश की लाज बचायी है।
परिवर्तन के लिये साथियों क्रान्ति द्वार पर आई है ।।

लाख–लाख झोपड़ियों में तो छाई हुई उदासी है,
सत्ता संपत्ति के बंगलों में हंसती पुरनमासी है.

हम सब अब ना चलने देंगे, हम ने कसमें खाई हैं।
परिवर्तन के लिये साथियो क्रान्ति द्वार पर आई है ।।

बदल जाय सम्पूर्ण व्यवस्था यही हमारी चाह है,
संविधान संशोधित होवे, यही हमारी राह है.

संविधान संशोधन से प्रारंभ हुई ये लड़ाई हैं
परिवर्तन के लिये साथियो कान्ति द्वार पर आई है ।।

आओ कृषक श्रमिक, नागरिकों परिवर्तन का नारा दो।
गुरुजन, शिक्षक, बुद्धिजीवियों, अनुभव भरा सहारा दो,

फिर देखें हम राजनीति कितनी बर्बर बौराई हैं।
परिवर्तन के लिये साथियो क्रान्ति द्वार पर आई है।

(परदा गिरता है)

नाटक 5
दृश्य एक
(परदा उठता है)

('महिला सशक्तिकरण मंच' का बैनर लगा है। नेता जी की पत्नी आशा महिला मंच की नेता के रूप में पूरे मेकअप के साथ बैठी है। उनके साथ ही महिला मंच की सदस्य नेता बैठी है)

श्रीमति आशा– प्यारी बहनो!
आज महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए यह सभा बुलाई गई है। पुरूषों ने सारे सामाजिक नियम सिर्फ महिलाओं की प्रगति और आजादी को छीनने के लिये बनाये हैं। पुरुषों ने हमें सदियों से धर्म का नाम लेकर घर के भीतर कैद कर रखा है। हमें पतिव्रता का पाठ पढ़ाया जाता है और खुद को स्त्रीव्रता नही कहता। हमें इसका खुलकर विरोध करना चाहिए। संविधान ने हमें पुरूषों से बराबरी का दर्जा दिया है राजनैतिक क्षेत्र में हमें पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त है फिर भी संसद में हमें आरक्षण नहीं मिला है। संसद में आधी सीटें महिलाओं को मिलनी चाहिए।

श्रीमति वर्मा– (गुस्से के स्वर में) आधी सीट क्यों हमें शत प्रतिशत सीटें मिलनी चाहिए।

श्रीमति आशा– (शांत स्वर में) में इसका विरोध करती हूँ हमे शत प्रतिशत नहीं बल्कि आधी सीटो का आरक्षण मिलना चाहिए बगैर पुरुषों के हम अधूरी रह जायेंगी, मांग उतनी ही की जाय, जो सम्भव है।

श्रीमति पंडित– मेरा प्रस्ताव है कि परिवार के एक ही सदस्य को लाभ का पद मिले। यदि पत्नी सांसद है तो उस परिवार का कोई दूसरा सांसद या विधायक नहीं बन सकता। ज्यादा से ज्यादा परिवार के लोग आगे आवें। यही नियम सरकारी नौकरियों में भी लागू होना चाहिए।

श्रीमति आशा– मैं इसका भी विरोध करती हूँ।

श्रीमति पंडित– अध्यक्ष महोदया। अपने विचारों पर मुहर लगाने के पहले विचार करें। वर्तमान में राजनीति में कुछ ही परिवार हावी हो रहे हैं। स्वतंत्रता के समय संसद में जितने परिवारों का प्रतिनिधित्व था, वह अब बहुत घट गया है। महिला आरक्षण के बाद और घट जायेगा। युवकों को भी अगर आरक्षण दे दें तो और घट जायेगा इसलिये मेरे प्रस्ताव पर विचार करना चाहिए।

श्रीमति आशा– बहनों। इस पर अंत में निर्णय लिया जायेगा। आप महिला आरक्षण पर अपना गुप्त मत 'हाँ' या 'ना' में लिख कर देंगी। इसके पहले मैं चाहती हूँ कि आप अपने विचार व्यक्त करें। सबसे पहले में कवयित्री श्रीमति कुसुम को आमंत्रित करती हूँ।

(..... श्रीमति कुसुम बैग से आइना निकाल कर अपने बालों को संवारती हैं, फिर मुस्कुराती हुई माइक पकड़ती हैं।)

श्रीमति कुसुम– बहनों! संविधान में पुरुष और नारी को समान अधिकार प्राप्त है। आज राजनीति में महिलायें पुरूषों से आगे निकल गई है। पहले नारी की पहचान पुरुष से होती थी पर आज पुरुष की पहचान औरत से होती है। गाँव में आज महिला सरपंच के नाम से उसके पति को जानते हैं, हमें संसद की आधी सीट जरूर मिलनी चाहिए। मैं अपना विचार अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करती है–

हम वर्तमान की नारी है। अब हम मर्दों पर भारी है।।
मर्दो ने बहुत सताया है। चुल्हा–चक्की करवाया है।।
अब मर्द बनायेगा खाना, और हम गायेंगे फिल्मी गाना।।
कानून हमें देता संरक्षण। हम चाह रहे है आरक्षण ।।
मर्दों ने खेल बहुत खेला। पर आज हमारी बारी है।।
हम वर्तमान की नारी है। अब हम मर्दों पर भारी है।।
अब नहीं चलेगी मर्दों की। तोड़ो अब बंधन पर्दों की।।
सड़को पर खुलकर आना है। यह कहता आज जमाना है।।
संसद बस आधा आधा हो। मत इसमें कोई बाधा हो।।

इतिहास पलटकर देखो तो। दुनिया नारी से हारी है।।
हम वर्तमान की नारी है। अब हम मर्दों पर भारी है।।

(सब ताली बजाते है) श्रीमति कुसुम बैठने के बाद

श्रीमती शर्मा– अब मै श्रीमती वर्मा को अपने विचार व्यक्त करने के लिये आमंत्रित करती है।

(श्रीमती वर्मा होठों पर लिपिस्टीक लगती उठती है और माइक पर जाती है)

श्रीमती वर्मा– मैं सीधे अपनी रचना पर आती हूँ जिसमे मेरे उबलते विचार है––

महिलाओं का हो आरक्षण संसद में भागीदारी हो।
आधे पर बैठे मर्द यहां और आधी सीट हमारी हो।।
हमने मर्दो पर राज किया, हम शासन तंत्र चलायेंगे।
इस देश को सब महिला मिलकर, फौरन आगे ले जायेंगे।
चूल्हा चक्की अब मर्द करे और राजनीति में नारी हो।
आधे पर बैठे मर्द यहां और आधी सीट हमारी हो।।
मेकअप करके हम महिलाएं जब भी संसद में जायेंगे।
डरकर के मर्द वहां फौरन बस अपना हाथ उठायेंगे।
हो आरक्षण के लिये सजग अब नारी शक्ति हमारी हो।
आधे पर बैठे मर्द यहा जो आधी सीट हमारी हो।

(तालियां बजती है। श्री मती वर्मा अपनी सीट पर बैठती है)

श्रीमती शर्मा– अब मैं मोहतरमा शबनम से गुजारिश करती हूँ कि ये अपना कलाम पेश करे।

शबनम (बडी श्रद्धा से)– अदब के साथ गजल पेश है–

बात सब औरतों को आज बताते रहिये।
मर्दों को आप बंदरों–सा नचाते रहिये।
मर्दों ने जुल्म जमाने से किया है हम पर
वक्त है आप भी सताते रहिए,
बच्चों को देखना अब मर्दों को लाजमी है।।
उनका क्या फर्ज है अब उनको बताते रहिये।।
हमें भी देश चलाने का तो मौका दे दो

पूरी दुनिया में यही बात उठाते रहिये।
बात सब औरतों को आज बताते रहिए,
मर्दों को आप बंदरो–सा नचाते रहिए।।

(तालियां बजती है। शबनम बैठती है)

श्रीमती पंडित– मैं आप सबके प्रस्ताव के पक्ष में नहीं हूँ क्योंकि अब हमें अपना विचार इस तरह सुधारना चाहिये।

हम नारी है उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है।
है नेह भरा आँचल जिसका ममता दुनियां ने मानी है।

नारी और नर है अलग नहीं, एक गाड़ी के दो बैल हैं हम
हम मिल करके यदि काम करें, तो नहीं किसी से जग में कम
हम साथ चले तो अच्छा है और खींचातानी नादानी है
हम नारी है उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है

जग में आया संकट तो दुर्गा बन हम आगे आये
जब दिखी जरूरत हम सबको हमने ही गांधी उपजाये
यह ऐसी महिला क्या जाने जिसको बनना नेतानी है
हम नारी हैं उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है।

अब राजनीति के चक्कर से इस नारी शक्ति को बचना है।
अब यह सुन्दर स्वस्थ समाज की श्रृजनशक्ति बन रचना है।
परिवार बने अब स्वर्ग हमें तो ऐसी ज्योति जलानी है।
हम नारी हैं उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है।

हो न्याय, दया, समता, ममता का सभी ओर सम्मान यहाँ।
हम जननी हैं, हम करें पुनः गौतम, गाँधी निर्माण यहाँ।
जब संकट में हो समाज तब हम झांसी की रानी हैं।
हम नारी हैं उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है।

नारी–और पुरूष दोनों पर ही संसार की जिम्मेदारी है।
जिसकी जैसी क्षमता होगी उसकी आगे की बारी है
अब स्वस्थ समाज बने अपना सबको यह बात बतानी है
हम नारी हैं उस भारत की जिसकी एक अमर कहानी है।

हम स्वतंत्र भारत में हैं। गुलामी काल में हमें आग बनने की जरूरत थी किन्तु अब हमें परिवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था ठीक करनी है इसलिये अब आग की जगह फूल बनना चाहिये। आप सब नारा लगावें–

(श्रीमति पंडित पहली लाइन तथा अन्य महिलाएँ दूसरी लाइन बोलती है।)
'हम भारत की धूल हैं, आग नहीं हैं, फूल है।

(परदा गिरता है)

दृश्य दो
(परदा उठता है)
(आशा, कुसुम और श्रीमती वर्मा बैठी हैं।)

आशा– यह पण्डित की औरत बहुत नेतागिरी करती है।

कुसुम– मैं भी नहीं समझ सकी कि उसे क्या दिक्कत है? न पण्डित को नेता बनना है न पण्डिताइन को, इन्हें सरकारी नौकरी भी नहीं करनी।

श्रीमति वर्मा– ठीक कहती हो बहन यदि हम लोग आगे आयेंगे तो इन पण्डित–पण्डिताइन को कुछ न कुछ फायदा ही होगा। ये दोनों रहते तो हम लोगों के साथ है और हमेशा हमारी ही जड़ खोदते रहते हैं।

कुसुम– यह आशा क्यों नहीं समझाती नेता जी को कि ऐसे लोगों को दूर रखें।

आशा– क्या करें बहन। यह पंडित मेरे ससुर जी के समय से साथ हैं। फिर यह पण्डित जो कुछ कहता है वह समाज के तो हित की बात है। भले ही हमारे विरुद्ध ही क्यों न हो।

श्रीमति वर्मा– जो बात हमारे खिलाफ है, यह बात करने वाला हमारा दुश्मन नम्बर एक है। यह कम्पटीशन का युग है। दूसरे को पछाड़ने में न्याय–अन्याय नहीं देखा जाता।

आशा– तो क्या करें इस पण्डित परिवार का।

कुसुम– अरे! करना क्या है? आदिवासी, हरिजन, पिछड़ा, अल्पसंख्यक की भावना को हवा दे दी। जाय पण्डित तो अपने आप चरण छूने लग जायेगा। पण्डिताइन भी सीधे मुँह बात करेगी।

आशा– यह कैसे हो? हमारे लिये तो कोई आदिवासी, हरिजन, पिछड़ा, अल्पसंख्यक जुदा नहीं है? हम इसमें क्या कर सकते हैं।

कुसुम– कर क्यों नहीं सकते। हमारे पति तो हमारे हाथ में है। हम उन्हें तैयार करे कि वे इस पण्डित परिवार के खिलाफ जाति–धर्म का भेद पैदा करें।

आशा– यह ठीक है। मैं आज ही नेताजी के कान भरती हूँ।

(परदा गिरता है)

दृश्य तीन
(परदा उठता है)

(नेताजी तथा उनकी पत्नी बैठे है। पत्नी बताती है कि पण्डित जी की पत्नी ने ही विरोध करके सारा वातावरण खराब किया जिससे प्रस्ताव पारित नहीं हुआ। नेताजी पण्डित जी को बुलाकर पूछते हैं।)

नेताजी– पंडित जी आपकी पत्नी ने कल महिला शस्क्तिकरण की बैठक में महिला आरक्षण का विरोध किया। क्यों किया उन्होंने ऐसा।

पंडित जी– सरकार मेरी पत्नी ने तो सिर्फ इतना कहा था कि एक ही परिवार के महिला पुरूष और बच्चे द्वारा आरक्षण का लाभ उठाकर उसका संसद या नौकरी में जाना ठीक नहीं है। एक परिवार के एक सदस्य की सीमा तय कर दी जाय।

नेताजी– यदि ऐसा न हो तो क्या बिगड़ जायेगा।

पंडित जी– ऐसी महिला आरक्षण से एक तो परिवार में टुटन पैदा होगी और सत्ता या रोजगार कुछ परिवारों तक सिमट जाने का खतरा है।

नेता पत्नी– तो क्या महिलाओं को आप कभी आगे नहीं आने देंगे।

पंडित जी– नहीं हमारी ऐसी मंशा नहीं। महिला पहले परिवार की इकाई है और तब उसके बाद समाज की।

नेता पत्नी– मतलब?

पंडित जी– मतलब यह कि यदि मेरे पड़ोस की औरत मेरी जगह लाभ का पद ले लेगी तो मेरी पत्नी दुखी होगी क्योंकि पड़ोसी की औरत के लाभ उसके परिवार को जायेंगे और मेरी हानि मेरी पत्नी को नुकसान में डालेगी।

नेताजी– अच्छा अच्छा आज कल तुम भी बहुत तर्क करना सीख गये हो। जानते हो कि तुम किससे बात कर रहे हो।

पंडित जी– सरकार जैसा आप कहेंगे, ऐसा ही होगा। आपने जो प्रस्ताव अपनी पत्नी से रखवाया है उस बैठक में अब मेरी पत्नी जायेगी ही नहीं। आप जैसा चाहे वैसा प्रस्ताव पारित करा लें।

नेताजी– अच्छा हुआ कि आप जल्दी समझ गये। जाइए और वैसा ही करिये।

(परदा गिरता है)

दृश्य चार

(परदा उठता है)

(पंडित जी, रमेश, महेश बैठे हैं)

महेश– पंडित जी, नेताजी ऐसा गलत बोलते रहते हैं। आप उन्हें कुछ कहते क्यों नहीं?

पंडित जी– भाई महेश। हमारी समझाने की सीमाएँ है। हम उनकी दलाली नहीं करते क्योंकि हमें उनसे कोई फायदा तो लेना नहीं है किन्तु हमें ऐसा वातावरण भी नहीं बनाना है कि हम सलाहकार से हटकर विरोधी की तरह दिखने लगे।

रमेश– क्या आप राजनीतिज्ञों के दुर्गुण अब तक नहीं समझे?

पंडित– राजनीति के सारे दुर्गुण जानता हूँ। लो सुनो– नेता एकम नेता, नेता दुनी दगाबाज, नेता तिया तिकड़मबाज, नेता चौके चार सौ बीस, नेता पंचे पुलिस दलाल, नेता छक्के छैल बिहारी, नेता सत्ते सत्ता चिपकू, नेता अठे अड़ंगे बाज, नेता नवे नमकहराम, नेता दशम् सत्यानाश ।

रमेश– फिर भी जानते हुए भी आप साथ क्यों है?

पंडित– मैं चिपका नहीं हूँ। विरोध करने से तो और मनमानी हो जायेगी। साथ रहने से शायद इनके लड़के को इस दुर्गुण से बचा सकूँ। क्यों कि भारत परिवार पूजक देश है। नेता जी के बाद उनका लड़का ही आने वाला है। मैं भावना में काम न करके बुद्धि से काम से रहा हूँ।

नाटक 6

दृश्य–1

(परदा उठता है)

(मंच पर बावला बाबा का अपने चेलों के साथ प्रवेश बाबा की वेशभूषा साधू के समान है, हाथ में तंबूरा लिये हैं। मंच पर बाबा आसन जमाकर बैठते हैं। चारों तरफ चेले बैठते हैं।)

एक चेला– बाबा! लोकतन्त्र में लोक यानि वोटर, वोट देने के बाद कूड़ेदान का कचरा हो जाता है समाज की समस्याएँ ज्योंकि त्यों बनी रहती है। नेता समाज की समस्याएँ इस तरह सुलझाते हैं कि समस्याओं से ही नई समस्याएं पैदा हो जाती है। यह कैसी राजनीति है।

दूसरा चेला– बाबा! राजनीति का मंत्र क्या है जिसके दम पर अपराधी नेता भी देवता की तरह

पूजा जाता है।

बाबा– बेटा मैं तुमको एक भजन सुनाता हूँ जिससे तुम्हारी बातों का समाधान होगा। एक नेता अपनी आने वाली पीढ़ी को यही भजन याद कराता है भजन को तुम भी दुहराना–

भजन–

अगर चाहते राजनीति में अपनी पकड़ यहाँ पर गहरी
तो बोलो बम–बम लहरी तो बोलो बम–बम लहरी–
बोलो झूठ लगे पर सच्चा, राजनीति में हरदम बच्चा।
भाषण देना गाल बजाना, अपने घर में भरो खजाना।
कभी समस्या न सुलझाओ पकड़ो कुर्सी माल उड़ावो।
भूखों को दो सस्ता राशन और करो जनता पर शासन।
शोर को झुठा तुम ऐसा जनता हो जाये सुन बहरी
तो बोलो बम–बम लहरी तो बोलो बम–बम लहरी।
बिजली डीजल कर दो सस्ती फिर काटो कुर्सी पर मस्ती।
बढ़ते रहें यहाँ धनवान दम तोड़े मजदूर, किसान।

अलग लगो पहनकर खादी रहो पालते तुम अपराधी ।
धर्मगुरू हो जितन भाई, उन्हें खिलाओ रोज मलाई ।
राजनीति का मंत्र यही है, अपनी पकड़ रखो बस गहरी
तो बोलो तुम बम–बम लहरी, तो बोलो तुम बम लहरी।
भजन समाप्त होने पर–

सब चेले– जै गुरुदेव की, जै गुरुदेव की। (सब जाते हैं।)

(परदा गिरता है)

दृश्य 2
(परदा उठता है)

(बुढ़ा नेता धोती कुरता और टोपी पहने, चश्मा लगाये कुर्सी पर बैठा है। वह अपने बेटे को बुलाता है)

नेता– ओ बेटा श्यामलाल । जरा मेरे पास आओ।

बेटा– आया पिता जी (कहता हुआ प्रवेश करता है साथ में पंडित जी भी है)

नेता– आओ बेटा बैठो, मैं तुम्हें ऐसी बातें बताने जा रहा हूँ जिस पर अमल करने पर तुम्हारी महरी सही सलामत बनी रहेगी।

बेटा– पिता जी आप जैसा नेता तो दूसरा है ही नहीं। आप ने जिन्दगी भर जनता को

ठगा है फिर भी जनता की नजर में आप सत्य संवादी हैं। आपने देश की दौलत को लूटा फिर भी जनता की नजर में आप हमेशा ईमानदार बने रहते है।

पिता– देखो बेटा! इस लोकतंत्र में हमने देश को भी बढ़ाया और अपने परिवार को भी। तुम्हे भी मेरी तरह नेता बनने के लिए तीन चार बातों को हमेशा याद रखना होगा।

बेटा– कौन–सी बातें पिता जी?

पिता– बताता हूँ–बताता हूँ–सब्र करो।

पहली बात यह कि तुम समाज की समस्याएं कभी सुलझने मत दो। हर समस्या को तुम खुद आगे आकर इस तरह सुलझाओं कि उससे कोई नई समस्या पैदा हो जाय! जैसे विकास होगा तो लोगों का रहन–सहन बदलेगा। तुम इस बदलाव को ऐसी समस्या बताओ जिससे विकास और बदलाव के बीच टकराव हो। हर मामले में दो गुट बनने दो और तुम दोनों का एक साथ समाधान करते हुए दिखो पर समाधान होने मत दो। वकील का काम केस जीतने की अपेक्षा केस को लम्बा खींचता जाना

चाहिए। अगर बीमार तुरंत दवा से ठीक हो जाये तो डाक्टर भूखा मर जायेगा। इस बात को हमेशा ध्यान में रखो।

बेटा– (चहकते हुए) और किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?

पिता– सुनो। दूसरी बात यह है कि तुम बिजली, डीजल और पेट्रोल की कीमत मत बढ़ने दो। इससे पूंजीपति और मध्यम वर्ग खुश भी होगा और तरक्की भी करेगा। श्रम का मूल्य नहीं बढ़ेगा, इससे मजदूर वर्ग में असंतोष बढ़ेगा। इसके बदले तुम श्रमिकों को सस्ता अनाज और पैसा दो, सस्ता खाना दो। वह भूखा रहेगा तभी तुम्हारी इज्जत करेगा और अहसान मानेगा।

बेटा– ठीक है पिता जी। आप के इस कीमती मंत्र को मैंने याद कर लिया। अब आगे बताइये।

पिता– बेटा! तुम अपराधों की परिभाषा बदल दो! हर अनैतिक काम को अपराध कहने लगो। ऐसी स्थिति पैदा करो कि हर आदमी अपने आप को अपराधी समझने लगे। कानूनों का जाल फैला दो। हर गैर कानूनी काम को अपराध मानो। अपराध बढ़ेगा तभी समाज तुम्हारी जरूरत महसूस करेगा। चौथी बात यह कि तुम समाज में बुराईयाँ पैदा करो, किन्तु ऐसा प्रचारित करो कि यह बुराई समाज की अपनी बुराई है। धर्म गुरुओं की मदद करो–उन्हें इज्जत दो, धर्मगुरू समाज को तोड़ने में तुम्हारी मदद करेंगे। दूसरी ओर धर्मगुरू समाज को ही दोषी बताते रहेंगे और तुम साफ बचे रहोगे।

बेटा– वाह पिता जी! अब आप की यह शिक्षा मेरे जीवन भर काम में आएगी।

पिता– बेटा! एक बात और ध्यान में रखना तुम अपना पैसा देकर ऐसी सामाजिक संस्थाएँ बनाना जो समाज को वर्ग टकराव की दिशा में बढ़ाते रहें। मैंने अपने जीवन में इन्हीं बातों का सहारा लिया, जिससे मैं आज एक सफल नेता हूँ। यदि तुमने मेरी बातों को ध्यान में रखा तो तुम भी एक आदर्श नेता बनोगे।

बेटा– (चहकते हुए) हाँ पिता जी! मैं आप के ही पदचिन्हों पर चलकर देश का भला करूँगा. यह मेरा वादा है।

पिता– और एक बात ध्यान रखना बेटे कि इस पंडित से थोड़ा सावधान रहना। यह पंडित दकियानूसी विचारों का है। यह तर्क तो बहुत रखता है किंतु वे तर्क तुम्हारे लिये नुकसानदेह होंगे।

पंडित जी – ऐसी बात नहीं है नेता जी मैं तो आपके पिता जी के समय से ही आपके परिवार के साथ जुड़ा हूँ। मैंने तो हमेशा ही आपको सलाह दी है कि समाज को आगे लाया जाये, आप चाहे मानें या न मानें।

नेता जी– मानने या ना मानने का प्रश्न ही कहाँ है। आप चाहते हैं कि आदिवासी, हरिजन लोग पहले जैसा ही आप लोगों की पूजा करता रहे। आप मुसलमानों का भी विरोध करते हैं और आप हरिजनों आदिवासियों एवं समाज के पिछड़े लोंगो के विरूध भी वातावरण बनाते रहते हैं।

पंडितजी– मैं तो कुछ भी कभी नहीं कहता। मैं तो सिर्फ इतना ही कहता हूँ कि समाज के सब प्रकार के लोग बैठकर जो निर्णय करले वह निर्णय आप स्वीकार कर लें। समाज को वर्गों में बांटना ठीक नहीं।

नेता जी– ठीक है, ठीक है। मैं कहां कुछ कह रहा हूँ। अब आप जाइये।

(पंडित जी उठकर जाते है।)
(बात खत्म होते ही एक व्यक्ति का प्रवेश)

नौकर– हुजूर, जिस ठेकेदार के बनाये चारों पुल और एक दर्जन स्कूल टूट गये हैं, वह ठेकेदार कुछ लेकर आया है।

नेता– ठीक है। वह अपना आदमी है, उसे बैठाओ। मैं आता हूँ।

(परदा गिरता है)

दृश्य 3
(परदा उठता है)
(मंच पर ठेकेदार, इंजीनियर, नेता और चमचे नेता बैठे हैं)

नेता– कहिए ठेकेदार साहब! ठीक–ठाक तो है।

ठेकेदार– श्रीमान् जी। पुल गिरने के लिए लोग हमें अपराधी मानने लगे हैं।

नेता– अरे भाई! धबराने की कोई बात नहीं, प्राकृतिक आपदा को तो कोई नहीं रोक सकता। बाढ़ में अगर पुल बह गया तो इसमें आप का क्या दोष है। आप नये पुल के लिए जगह देखिये, हम फिर बजट दिला देंगे।

ठेकेदार– (सर झुकाकार) धन्य हो नेता जी। हमारा प्रणाम और यह बन्डल स्वीकार कीजिए।

नेता– अरे! अब इसकी क्या जरूरत है भाई। मैं तो आप लोगों का सेवक हूँ।

(कह कर धीरे से बंडल ले लेते हैं)

नेता– अब इंजीनियर साहब अपनी समस्या बतायें।

इंजीनियर– सर औद्योगिक कॉलोनी में जो गंदा पानी भर गया है उसे किस नाले से बहाया जाय?

नेता– अरे! इतनी सी बात के लिये परेशान हो, जाओ पानी को हरिजन बस्ती की तरफ खोल दो और उन्हें समझा दो कि यह अमीरों का जुल्म है। उन्हें शांत करने के लिये हम पहुँच जायेंगे।

इंजीनियर– मैं आपके आदेश को जानता था इसलिये पहले ही हरिजन मुहल्ले में पानी छोड़ने के लिये हुक्म दे आया हूँ। हरिजन पहुंचते ही होंगे।

(चार पांच हरिजनों का प्रवेश)

नेता जी की जय हो! अमीरों से हमारी रक्षा कीजिए.....। हुजूर, हमारी बस्ती में उन्होंने गंदे नाले का पानी छोड़ दिया है, हम उनके खिलाफ आन्दोलन करेंगे।

नेता– (इंजीनियर से) देखिये इंजीनियर साहब, कुछ शरारती लोगों ने इनकी बस्ती में बाढ़ का पानी छोड़ दिया है। आप फौरन उस पानी को नदी में छोड़ने का प्रबंध करें, बाकि हम देख लेंगे।

इंजीनियर– (मुस्कुराते हुए) ठीक है सर, मैं अभी जाता हूँ।

एक हरिजन– भाइयों! नेता जी ने तत्काल हमारी समस्या को हल कर दिया है। इसके लिए हम उनके आभारी है। (सभी एक साथ) नेता जी जिन्दाबाद, नेताजी जिन्दाबाद–

(परदा गिरता है)

दृश्य–चार

(परदा उठता है)

(पंडित, रमेश और महेश बैठे है।)

रमेश– पंडित जी। आपने देखा कि किस तरह तिकड़म बाजी हो रही है। नेता जी हमेशा ही ऐसा गलत बोलते रहते हैं। पंडित जी उन्हें कुछ समझाते क्यों नहीं।

पंडित जी– भाई महेश, हमारी समझाने की सीमाएं है। हम उनकी दलाली नहीं करते क्योंकि हमें उनसे कोई फायदा तो लेना नहीं है। किन्तु हमें ऐसा वातावरण भी नहीं बनाना है कि सलाहकार से हटकर विरोधी की तरह दिखने लगें।

महेश– पंडित जी ठीक कह रहे है भाई! ऐसी तिकड़म तो समाज में हमेशा ही होती रहती है और उसके समाधान की कोशिश भी होते ही रहती है।

रमेश– तो पंडित जी अब तक राजनेताओं के दुर्गुण नहीं समझे सके क्या?

पंडित जी– समझता तो सब हूँ भाई पर क्या करूँ?

दोहे – नेता गर सज्जन रहे, वैश्या लज्जावान।
फिर समझो दोनों गये, सीधे कब्रिस्तान।
नेता तिकडमबाज हो, करे जो छुपकर घाव।

दगाबाज का गुण रहे, जीते तुरंत चुनाव।
झूठ बराबर तप नही सांच बराबर पाप।
जो नेता यह जप करें, सफल मानिये आप।
अवगुण चाहे लाख हों, पर रक्खें यह ध्यान।
नेता ही कलिकाल में, है सबका भगवान।

महेश– तो क्या अब कोई मार्ग नहीं है?

पंडित– सुनो एक गीत सुनाता हूँ, उसी में इसका समाधान भी छिपा है।

गीत– नया समाज बनायेंगे, हम नया समाज बनायेंगे।
ज्ञानदीप की किरणों को हम घर–घर तक पहुंचायेंगे ।
नया समाज बनायेंगे.....
ऐसा एक समाज बनेगा, जहां ना होगी बेकारी
गुण्डागर्दी, छीना–झपटी और न होगी लाचारी,
जिनके पावों में छाले हैं, हम उनको सहलायेंगे।
नया समाज बनायेंगे.....

जाति धर्म का भेद न होगा, अपना सुन्दर सपना है,
भाषा के झगड़े मिट जायें, सारा ही जग अपना है।
सज्जन जन के हार गले में हम मिलकर पहनायेंगे।
नया समाज बनायेंगे.....
मां–बहनों की लाज न जाये, ऐसा एक समाज बने,
लोकतंत्र का लोक प्रबल हो, ऐसा सुन्दर राज बने,
गहन अंधेरा मिट जायेगा, ऐसा दीप जलायेंगे।
नया समाज बनायेंगे.....
धूर्त–तिकड़मी बाँध ना पावे, मानवता के पांवों को,
भ्रष्टाचारी लूट न पाये, सज्जनता के भावों को,
'मुरारी' यह सदेश हमारा घर–घर तक पहुँचायेंगे।
नया समाज बनायेंगे.....

महेश– क्या यह संभव है?

पंडित जी– यदि असंभव दिखे तो ले यह दूसरा गीत सुन।

सम्पाती कह गये गरूड़ से ऐसा भी दिन आयेगा।
जनता सारी राज करेगा, नेता धक्के खायेगा।

क्रान्ति एक ऐसी भी होगी, गुण्डे अन्दर जायेंगे.
जिस नेता ने खून पिया है, वो अब बच नहीं पायेंगे
जो भी होगा भला आदमी वह आगे बढ़ पायेगा।।
जनता सारी राज करेगी....

कानूनों का जाल हटेगा, कोर्ट वकील घट जायेंगे,
अपराधों की लिस्ट घटेगी, आरक्षण हट जायेंगे,
जो कोई भी करेगा मेहनत, वही पेट भर खायेगा.
जनता सारी राज करेगी.....

डीजल, बिजली महंगा होगा सभी टैक्स हट जायेंगे,
टूट जायेंगे विभाग सारे अफसर लूट न पायेंगे.
सभी ओर खुशहाली होगी हर चेहरे खिल जायेंगे।
जनता सारी राज करेगी.....
बनियाँ, तस्कर, भ्रष्ट है अफसर, कह नेता लड़वाते हैं,
माल मलाई नेता खाते हम सब छाछ न पाते हैं.
रीत यही है प्रजातंत्र की, बदलेगा सुख पायेगा.
जनता सारी राज करेगी.....

(परदा गिरता है)

नाटक भाग – 7
(परदा उठता है)

(मंच पर दो व्यक्तियों का प्रदेश एक का नाम महेश और दूसरे का रमेश है)

महेश– भाई रमेश! आजादी के 76 साल बाद भी गांधी का आखिरी व्यक्ति जहाँ का तहाँ है। गरीबी और अमीरी के बीच की खाई और अधिक चौड़ी हुई है। नेता अपने स्वार्थ में डूबे है। ऐसी स्थिति में हम अपराध मुक्त और भय मुक्त समाज की कल्पना कैसे करें।

रमेश– तुम ठीक कहते हो भाई। आजादी के पहले समाज का जो नैतिक चरित्र था अब वह कहाँ है? नेताजी के दादा ने लड़ाई में अपना जीवन तक बलिदान कर दिया। गुलामी की बेड़ियाँ टूटने के बाद उन्होंने एक चरित्रवान राष्ट्र की कल्पना की थी, लेकिन आजादी के बाद तो राजनीति में परिवारवाद हावी हो गया। सत्ता परिवारों के हाथों में जाती रही। अब देखो नेता जी के बाद उनका बेटा कुर्सी पर बैठ गया है। और यदि कोई अनहोनी हो जाये तो उसके बेटे की जगह उसकी बहू तैयार मिलेगी।

महेश– समझ तो हम भी रहे है, पर हम क्या कर सकते है? देखो पंडित जी आ रहे है। शायद वही कुछ उपाय बताये।

(पंडित जी का प्रवेश। दोनों झुककर प्रणाम करते है)

महेश– पंडित जी, आपका तो नेता जी के परिवार में बहुत सम्मान है। नेता जी आपकी बात बहुत मानते हैं। आप नेता जी को कुछ क्यों नही समझाते हैं।

पंडित जी– अरे भाई नेता जी तो उस राह पर चल रहे है जिसमे हम जैसों की कोई पूछ ही नहीं है। हम तो किसी तरह अपनी इज्जत बचाकर गुजारा कर रहे हैं।

रमेश– क्या आपकी भी बात नहीं मानते हैं नेता जी।

पंडित जी– अरे भाई रमेश मानते तो क्या ऐसा ही होता भी देखो न किस तरह समाज को तोड़ा जा रहा है और तोड़ने का सारा दोष ही समाज पर ही डाला

जा रहा है। साथ ही हम लोगों से जबरदस्ती 'हाँ' करवाई जा रही है। अब तो नेताजी का बेटा बैठ रहा है। देखो वह दादा की राह पर चलता है या पिताजी की राह पर या अपना कोई राह बनाता है।

(परदा गिरता है)

दृश्य–2
(परदा उठता है)

(नेता का बेटा कुर्सी पर बैठा है। उसके पास ही चमचे नेता खड़े हैं। महेश और रमेश भी वहाँ पहुँचते हैं।)

बेटा– (सबसे पूछता है कि–) आप सब मुझे सलाह दें कि मैं दादा जी की राह पर चलूं या पिता जी की राह पर चलूँ। आप लोग जैसी सलाह देंगे मैं वैसा ही करूंगा।

(तभी नेता का बेटा सो जाता हैं लोग उसे जगाते है और पूछते हैं। नेता का बेटा चीखता रहता है, उस पर उसके दादा की आत्मा सवार हो जाती है)

नेता– आप कौन है और क्या चाहते है?

आवेशित नेता का बेटा–मैं इस लड़के का दादा हूँ। मैंने आजादी की लड़ाई में अपनी कुर्बानी दी।

दादा – मेरे जैसे हजारों देश भक्त शहीद हुए। हमने आजादी के बाद एक चरित्रवान भारत की कल्पना की थी।

नेता– हम देश को विकास की ओर ले जा रहे हैं– हम आपका सपना साकार करेंगे।

नेता का बेटा– (चिल्लाकर) तुम्हें मैंने जब काम सौपा था तब जैसा समाज था क्या आज वैसा ही है?

नेता– दादा। जी देश तो अब और बेहतर स्थिति में है। दूरभाष, आवागमन, बिजली, दवा, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में तरक्की हुई है। अब तो भारत विकसित देशों से भी कम्पीटिशन कर रहा है। हम विश्व स्तरीय खेलों का आयोजना सफलता पूर्वक करा चुके हैं।

नेता का बेटा– तुम यह बताओ के आम आदमी भय ग्रस्त है या भयमुक्त। समाज में आपसी विश्वास घटा है या बढ़ा है? नैतिक चरित्र का क्या हाल है? भ्रष्टाचार कैसा है? बोलो। मेरे प्रश्नों का जवाब दो।

नेता– हे पिता जी। यह काम हमारा नही था। भ्रष्टाचार इस लिये बढ़ा कि आम लोगों का चरित्र गिरा और चरित्र इस लिए गिरा क्योकि परिवार टूटे।

आवेशित बेटा– (चीखकर) परिवार टूटे या तुमने योजनापूर्वक कानून बनाकर तोड़े? समाज टूट रहा है, या तोड़ा जा रहा है? तुम जवाब दो कि तुमने संवैधानिक तरीके से यह किया था नहीं ?

नेता– पिताजी मैने जो कुछ भी किया वह जरूरी था। मैं आपके समान तो था नहीं। मुझे तो देश को भी आगे ले जाना था और अपने को भी। आज गाँव–गाँव में आपकी पूजा हो रही है तो इसलिए कि मैं अपनी राह चला। आप सोचिये कि अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को कोई क्यों नहीं पूछता?

बेटा– मैं इस पूजा से धृणा करता हूँ जिसमें तुम्हारे सामाजिक पाप छिपे हों। तुमने अपने स्वार्थ के लिए पाप किये और दोष समाज को दे रहे हो। तुम सही–सही उत्तर दो कि क्या मैंने जैसा समाज सौपा था आज वैसा ही समाज है?

नेता– मैं मानता हूँ कि समाज वैसा नहीं है किन्तु मेरे पास कोई और मार्ग नहीं था।

बेटा– मैं तेरी बात कैसे मान लूँ। समाज और परिवार को यदि न तोड़ा जाय तो देश की प्रगति में क्या बाधा है। भ्रष्टाचार को बढ़ाने से देश का क्या संबंध है ? क्या कोई मार्ग नहीं कि देश भी प्रगति करता रहे और समाज भी न टूटे। असल बात यह है कि तुम्हें अपनी और अपने सात पीढ़ियों तक को अमर करने की चिंता थी, फिर चाहे समाज रहे या नहीं। अब तुम अपने बेटे को भी वही मार्ग दिखा रहे हो।

नेता– ठीक है पिता जी! अब आप अपने लोक को जाइये। मैं अब अपने बेटे को अपने रास्ते पर चलने के लिए बाध्य नहीं करूँगा। मेरा बेटा जिस राह चले, चाहे जिसकी सलाह ले, वह इसके लिये स्वतंत्र है।

आवेशित बेटा– ठीक है। मैं जाता हूँ। मेरी बातों को तेरा बेटा पूरी करेगा।

(आवेशित बेटा होश में आकर कुर्सी पर बैठता है। सभी खड़े हैं)

नेता पुत्र– भाईयों। दादा जी की आत्मा ने मेरी ऑखे खोल दी है। अब पुरानी नीतियाँ धीरे–धीरे बदली जायेगी। लोकतंत्र को लोकस्वराज्य का मार्ग दिया जायेगा। पिता जी के समय की सभी नीतियां बदल दी जायेगी। अपनी सारी सम्पति आज से पिता जी की होगी और मैं समाज द्वारा दी गई व्यवस्था पर परिवार चलाउँगा। अब ग्रामसभा सर्वोच्य होगी। संविधान में व्यवस्था होगी कि जनप्रतिनिधि को चुनने वाले लोग उसे कभी भी हटा सकेंगे। लोकतंत्र लोक नियंत्रित होगा। ग्राम सभा स्वयं में ग्राम संसद होगी। यह अपना कानून बना सकेगी। हर ग्राम संसद को अपनी स्थानीय स्वायत्तता होगी। समान नागरिक संहिता की मांग बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था स्वायत्त होगी।

पंडित जी– आप बताईये कि प्रशासनिक व्यवस्था में आप क्या परिवर्तन करेंगे?

नेता पुत्र– आज से पंडित जी हमारे प्रशासन में प्रधानमंत्री का काम सम्हालेंगे। आप सब और बाकी बातें इनसे पूछ लें। बताइये पंडित जी जरा इन लोगों को कुछ.....।

पंडित जी– मैं तो चाहता हूँ कि डीजल, पेट्रोल, बिजली का दाम दोगुना करके प्रत्येक व्यक्ति को दो हजार रूपया महीना भत्ता दे दिया जाय।

सेठ– अरे! यह कैसे सम्भव है। अरे पंडित जी, उद्योग–धन्धे तो बर्बाद ही जायेंगे। सारे रोजगार और काम धंधे खत्म हो जायेंगे। हमें तो मजदूर भी नहीं मिलेंगे, अरे पंडित जी भारी अनर्थ हो जायेगा।

पंडित जी– यह सही है कि आपका बजट कुछ घट जाएगा, किंतु, इससे श्रम का मूल्य बढ़ जायेगा। कृषि उपजों पर से टैक्स हट जायेगा। गरीबों का बजट कुछ बढ़ जायेगा। कुछ शहर उजड़ेगे और कुछ गाँव बसेगे।

सेठ जी– हम यह नहीं चलने देंगे। बाकी लोगों की क्या राय है?

घुरउ– हम आदिवासियों का क्या होगा?

पंडित जी– आपकी मजदूरी का मूल्य अपने आप दुगुना हो जायेगा तथा साथ में दो हजार रूपये महीना मिलेगा। आप आदिवासी रहेंगे ही नहीं और न वैसी जरूरत रहेगी।

गुण्डा– जब विभाग ही टूट जायेगे, तब सरकार क्या करेगी?

पंडित– सरकार सबसे पहले तुम लोगों को दुरूस्त करेगी। दादागीरी, गुण्डागर्दी पर पूरा नियंत्रण होगा। समान नागरिक संहिता लागू होगा। धर्म–जाति के झगड़े नहीं होंगे धर्म–परिवर्तन कराने पर रोक होगी। महिला और पुरुष के बीच कोई भेदभाव नहीं होगा।

सेठ– कैसे सम्भव हो पायेगा यह सब?

पंडित जी– परिवार–व्यवस्था, गाँव–व्यवस्था को मजबूत करने से यह अपने आप होगा। थोड़े दिन देखियेगा तो आपको पता चल जायेगा।

(सेठ बेहोश होकर गिर पड़ता है, गुण्डा वहाँ से चला जाता है बाकी लोग जय जयकार करते है।)

(इतना कहते कहते नेता का बेटा फिर बेहोश होकर आवेशित हो जाता है। उसके उपर उसके दादा की आत्मा सवार हो जाती है)

आवेशित नेता– (चीखते हुए) अब तुमने ठीक राह पकड़ी है। मेरी आत्मा 76 वर्षों से पश्चाताप कर रही थी। मैंने अंग्रेजों की जेल में चक्की पीसी, किंतु मेरा ही बेटा कुर्सी पर बैठते ही समाज को गुलाम बनाकर चक्की पिसवा रहा है और खुद सत्ता पर बैठकर हवाई जहाज में यात्रा कर रहा है। आज मैं पश्चाताप से मुक्त हुआ। मेरे पौत्र ने आज 76 वर्षों की भूल को सुधार कर मुझे शांति प्रदान की है। मैं खुश हूँ। मैं जाता हूँ– समाज जिंदाबाद– ..... (इसके तुरंत बाद कोई गीत गाया जाये)–

(1) ज्ञान का दीप घर–घर जले साथियो,
वरना चढ़ता अन्धेरा निगल जायेगा।
वक्त है आईये अब भी चिन्तन करें,
कोई सूरज नया तब निकल आयेगा।।
आज अपराध चारों तरफ बढ़ रहे।

और सज्जन विवश से पड़े रो रहे,
जागरण का समय है यही साथियो,
आप जागें जमाना बदल जायेगा।
वरना बढ़ता अन्धेरा.....।।
कोई प्रह्लाद को मत जलाये यहां।
कोई मजबूर को मत सताये यहाँ ।
चेतना में नई शक्ति भर दीजिये।।
दुष्टता का जनाजा निकल जायेगा।
वरना बढ़ता अधेरा.....।।
आज मजबूर कंधों पर है हर तरफ
एक सड़ती हुई लाश कानून की,
अगर ये बदली गई ना व्यवस्था अभी
वक्त इसका मुरारी निकल जायेगा
वरना बढ़ता अधेरा .....।।

(2) हम लोग है ऐसे दीवाने, दुनियां को बदल कर मानेंगे।
मंजिल की धुन में आये हैं, मंजिल को पाकर मानेंगे।।
जो लक्ष्य हो अपना पूरा हो तबही तो तसल्ली पायेंगे,
ऐसे तो नहीं टलने वाले, हम आगे बढ़ते जायेंगे
इस दिल में हजारों मौजें हैं, तूफान उठा कर मानेंगे।
हम लोग है ऐसे दीवाने दुनियां को बदलकर कर मानेंगे।

दो दिन की बहारें है जग में, जब जुल्म किसी का चलता है,
हर जुल्म का सूरज लाख जले, हर शाम को लेकिन ढलता है.
नफरत के शोले जहाँ भी हो, हम उनको बुझाकर मानेंगे,
हम लोग है ऐसे दीवाने, दुनियां को बदल कर मानेंगे।

सच्चाई की खातिर ही, तो गांधी ने गोली खाई थी
ऋषि दयानन्द ने इस रूप के खातिर ही जान गंवाई थी.
हाँ, हम भी किसी से कम तो नहीं, तसवीर बदल कर मानेंगे
हम लोग हैं ऐसे दीवाने दुनियां को बदल कर मानेंगे।

(3) हम मोड़ने चले हैं प्रचण्ड युग की धारा।
उठते हैं गिरते–गिरते हे साथी दो सहारा।।

फैली अनीतियाँ हैं, उन को उखाड़ना है,
छल कंस कर रहा है उस को पछाड़ना है,
संकीर्ण स्वार्थ की यह बस्ती उजाड़ना है,
फिर व्यूह कौरवों का हम को बिगाड़ना है,

मिट जाये फिर असुरता यह लक्ष्य है हमारा।
हम मोड़ने चले हैं, प्रचण्ड युग की धारा ।।

हम कर्म तो करेंगे परिणाम मांगते हैं.
साधन स्वयं गढ़ेंगे सद्ज्ञान मांगते हैं,
भगवान तुम से कब हम बरदान मांगते हैं.
बस एक सत–असत की पहचान मांगते है.

यह पा सकें तभी जब आशीष हो तुम्हारा।
हम मोड़ने चले हैं, प्रचण्ड युग की धारा ।।

हम युद्ध तो करेंगे, पर रथ तुम्हीं सम्हालो,
हम अस्थि दान देंगे तुम वज्र तो बना लो,
संकल्प ध्रुव हमारा तुम गोद में बिठा लो,
गिरते हुए रथी को धीरे से तुम उठा लो,

तुम दौड़ करके आये जब मंच ने पुकारा।
हम मोडने चले हैं, प्रचण्ड युग की धारा ।।

(परदा गिरता है)